पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत
शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ की ह़याते मुबारका के रोशन अवराक़

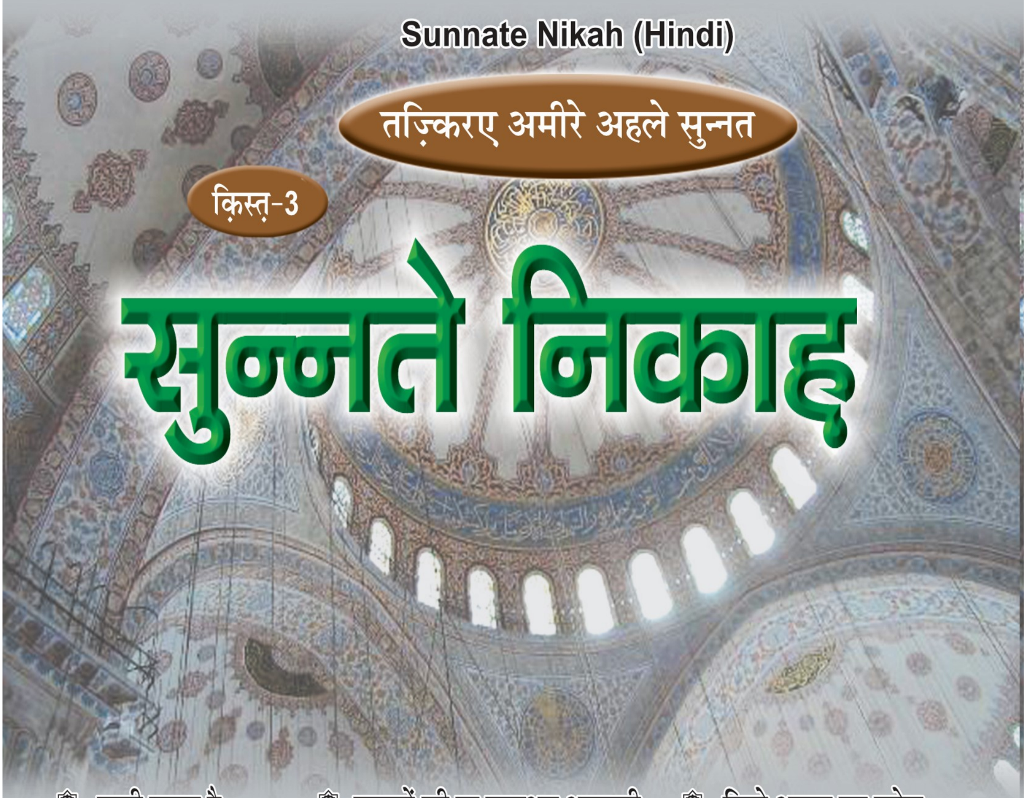

Sunnate Nikah (Hindi)

तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत

क़िस्त़-3

सुन्नते निकाह़

- शादी सुन्नत है
- निकाह़ की निय्यतें
- बरकत वाला निकाह़
- नमाज़ों की बा जमाअ़त अदाएगी
- शादी का पहला दा'वत नामा
- शहज़ादए अ़त़्त़ार की शादी
- बिन्ते अ़त़्त़ार का जहेज़
- मक्तूबाते अ़त़्त़ारिय्या
- मदनी सेहरे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **सुन्नते निकाह़**

सिने त़बाअ़त : शा'बान सि. **1444** हि., (मार्च सि. **2023** ई.)

ता'दाद : 3100

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**सुन्नते निकाह़**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • **E-mail :** hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاريخ دمشق لابن عَساكِر ج٥١ ص١٣٨ دارالفكربيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

पहले इसे पढ़ लीजिये

मीठ मीठे इस्लामी भाइयो ! "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" के लिये दीगर ज़राएअ़ के साथ साथ बुज़ुर्गाने दीन عَلَيْهِمُ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن के ह़ालात व वाक़िआ़त जानना भी बेह़द **मुफ़ीद** है क्यूं कि येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या अह़कामे शरीअ़त पर मज़्बूती से **कारबन्द** थे। चुनान्चे इन्ही के नक़्शे क़दम पर चल कर हम **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत से क़ब्रो ह़श्र में सुर्ख़रू हो कर अ़ज़ाबाते दोज़ख़ से **ख़लासी** और इन्आ़माते जन्नत तक **रसाई** पा सकते हैं। ज़बानी और क़लमी दोनों त़रह़ से तज़्किरए सालिह़ीन हमारे अकाबिरीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का शेवा रहा है शायद इसी लिये **सीरत निगारी** का येह सिल्सिला कई सदियों से जारी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मकतबतुल मदीना** से सीरत के मौज़ूअ़ पर भी कई **कुतुबो रसाइल** शाएअ़ हो चुके हैं, **मसलन** सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) का इ़श्क़े रसूल, इमामे हुसैन (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) की करामात, जिन्नात का बादशाह, सांप नुमा जिन्न, **तज़्किरए** इमाम अह़मद रज़ा (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه), फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द, शर्हे शजरए क़ादिरिय्या वग़ैरहा। इसी सिल्सिले की एक कड़ी "**तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत**" भी है जिस में पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **इब्तिदाई ह़ालाते ज़िन्दगी**, रोज़मर्रा के **मा'मूलात, इ़बादात, मुजाहदात, अख़्लाक़िय्यात व दीनी ख़िदमात** के वाक़िआ़त के साथ साथ आप की ज़ाते मुबारका से ज़ाहिर होने वाली **बरकात व करामात** और आप की **तस्नीफ़ात, मक्तूबात, बयानात व मल्फ़ूज़ात के फ़ुयूज़ात** भी जम्अ़ किये गए हैं। फ़िलह़ाल "**तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत**" को मुख़्तसर रसाइल की सूरत में शाएअ़ किया जा रहा है ताकि मुतवस्सित त़ब्क़े से तअ़ल्लुक़ रखने वाले इस्लामी भाई भी ब आसानी इन्हें ख़रीद कर पढ़ सकें। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ बा'द में इन रसाइल का मज्मूआ़ भी शाएअ़ किया जाएगा। इस

वक़्त **"तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत"** का तीसरा ह़िस्सा बनाम **"सुन्नते निकाह़"** आप के सामने है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ चौथा ह़िस्सा **"शौक़े इ़ल्मे दीन"** के नाम से अ़न्क़रीब पेश किया जाएगा। इस का पहला और दूसरा ह़िस्सा भी मकतबतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब कीजिये।

मदनी इल्तिजा : "तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत" में हम ने मह़्ज़ सुनी सुनाई बातों को नक़्ल करने से गुरेज़ किया है बल्कि ह़त्तल मक़्दूर मा'लूमात फ़राहम करने वालों से मुलाक़ात या राबित़ा कर के तस्दीक़ कर ली गई है। ताहम हम मह़्ज़ बशर हैं ख़त़ा से **पाक** नहीं हैं, फिर कम्पोज़िंग की ग़लत़ी भी मुम्किन है, इस लिये दरख़्वास्त है कि अगर आप को इन रसाइल में किसी क़िस्म की ग़लत़ी नज़र आए तो अपने नाम व पते के साथ तह़रीरी त़ौर पर हमारी **इस्लाह़** फ़रमा दीजिये। और अगर किसी को इस तज़्किरे में शामिल ह़ालात व वाक़िआ़त के बारे में **मज़ीद मा'लूमात** हों या कोई **मश्वरा** देना चाहें तो वोह भी सरे वरक़ पर लिखे हुए फ़ोन नम्बर पर या ब ज़रीअ़ए डाक या ई मेइल राबित़ा फ़रमा लें। हमें मैदाने तालीफ़ व तस्नीफ़ की शह सुवारी का **दा'वा** हरगिज़ नहीं बल्कि जज़्बा ही हमारा रहनुमा है, बहर ह़ाल हमारी भरपूर कोशिश होती है कि जितना बन पड़े इन्शा परदाज़ी (या'नी फ़न्ने तह़रीर) और सवानेह़ निगारी के **उसूलों** का ख़याल रखें, लिहाज़ा इस **"तज़्किरे"** को उर्दू अदब का शाहकार समझने के बजाए **एह़सासे ज़िम्मादारी** के अवराक़ में लिपटा हुवा तोह़फ़ा समझ लीजिये। जो **अन्दाज़** आप को पसन्द आए वोह **तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत** के हुस्न की **रा'नाई** और क़ाबिले ए'तिराज़ ह़िस्सा हमारी **कोताह फ़हमी** का नतीजा होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि हमें **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** के लिये **मदनी इन्आ़मात** के के मुत़ाबिक़ अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

13 शव्वालुल मुकर्रम 1429 सि.हि., 13 अक्तूबर 2008 सि.ई.

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सय्यिदुल मुरसलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है : "जो मुझ पर शबे जुमुआ़ और जुमुआ़ के रोज़ सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े, अल्लाह तआ़ला उस की सो ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा।" (جامع الاحادیث للسیوطی، رقم۷۳۷۷، ج۳، ص۷۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शादी सुन्नत है

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**निकाह़** मेरी सुन्नत से है पस जो शख़्स मेरी सुन्नत पर अ़मल न करे वोह मुझ से नहीं। लिहाज़ा **निकाह़** करो, क्यूं कि मैं तुम्हारी कसरत की बिना पर दीगर उम्मतों पर फ़ख़्र करूंगा। जो कुदरत रखता हो वोह **निकाह़** करे और जो कुदरत न पाए तो रोज़े रखा करे क्यूं कि रोज़ा शह्वत को तोड़ता है।" (سنن ابن ماجہ، کتاب النکاح، باب ماجاء فی فضل النکاح، رقم ۱۸۴۶، ج۲، ص۴۰۶)

निकाह़ करना कब सुन्नत है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर महर, नान व नफ़्क़ा देने और अज़्दवाजी हुक़ूक़ पूरे करने पर क़ादिर हो और शह्वत का बहुत ज़ियादा ग़लबा न हो तो **निकाह़** करना **सुन्नते मुअक्कदा** है। ऐसी ह़ालत में **निकाह़** न करने पर अड़े रहना **गुनाह है**। अगर ह़राम से बचना...या इत्तिबाए सुन्नत...या औलाद का हुसूल पेशे नज़र हो तो **सवाब** भी पाएगा और अगर मह़ज़ हुसूले लज़्ज़त या क़ज़ाए शह्वत मक़्सूद हो तो **सवाब** नहीं मिलेगा, **निकाह़** बहर ह़ाल हो जाएगा। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, किताबुन्निकाह़, ह़िस्सा : 7, स. 559)

निकाह़ करना फ़र्ज़ भी है और ह़राम भी !

निकाह़ कभी फ़र्ज़, कभी वाजिब, कभी मक्रूह और बा'ज़ अवक़ात तो ह़राम भी होता है । चुनान्चे अगर येह यक़ीन हो कि **निकाह़** न करने की सूरत में ज़िना में मुब्तला हो जाएगा तो **निकाह़** करना **फ़र्ज़** है । ऐसी सूरत में **निकाह़** न करने पर गुनाहगार होगा । अगर महर व नफ़्क़ा देने पर क़ुदरत हो और ग़लबए शह्वत के सबब ज़िना या बद निगाही या मुश्त ज़नी में मुब्तला होने का अन्देशा हो तो इस सूरत में निकाह़ **वाजिब** है अगर नहीं करेगा तो गुनाहगार होगा । अगर येह अन्देशा हो कि **निकाह़** करने की सूरत में नान व नफ़्क़ा या दीगर ज़रूरी बातों को पूरा न कर सकेगा तो अब **निकाह़** करना **मक्रूह** है । अगर येह यक़ीन हो कि **निकाह़** करने की सूरत में नान व नफ़्क़ा या दीगर ज़रूरी बातों को पूरा न कर सकेगा तो अब **निकाह़** करना **ह़राम** और **जहन्नम में ले जाने वाला काम** है (ऐसी सूरत में शह्वत तोड़ने के लिये रोज़े रखने की तरकीब बनाए) । (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, किताबुन्निकाह़, ह़िस्सा : 7, स. 559)

निकाह़ की निय्यतें

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ ० या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (المعجم الكبير للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : **निकाह़** करने वाले को चाहिये कि अच्छी अच्छी निय्यतें कर ले ताकि दीगर फ़वाइद के साथ साथ वोह सवाब का भी मुस्तह़िक़ हो सके ।

"**निकाह़ सुन्नत है**" के नव हुरूफ़ की निस्बत से 9 निय्यतें पेशे ख़िदमत हैं :

{1} सुन्नते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अदाएगी करूंगा {2} नेक औ़रत से **निकाह़** करूंगा {3} अच्छी क़ौम में निकाह़ करूंगा {4} इस के ज़रीए ईमान की ह़िफ़ाज़त करूंगा {5} इस के ज़रीए शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करूंगा {6} ख़ुद को बद निगाही से बचाऊंगा {7} मह़्ज़ लज़्ज़त या क़ज़ाए शह्वत के लिये नहीं ह़ुसूले औलाद के लिये तख़्लिया करूंगा {8} मिलाप से पहले ''बिस्मिल्लाह'' और मस्नून दुआ़ पढ़ूंगा {9} सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में इज़ाफ़े का ज़रीआ़ बनूंगा ।

मदनी मश्वरा : शादी शुदगान निय्यतों वग़ैरा की मज़ीद मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या (तख़रीज शुदा) जिल्द 23 सफ़ह़ा नम्बर 385, 386 पर मस्अला नम्बर 41, 42 का मुत़ालआ़ फ़रमा लें । (माख़ूज़ अज़ तरबिय्यते औलाद, स. 33)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का निकाहे़ मुबारक

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शादी ग़ालिबन 1398 सि.हि., 1978 सि.ई. में तक़रीबन 29 बरस की उ़म्र में हुई ।

कोई रिश्ता देने पर तय्यार न था !

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक मदनी मुज़ाकरे[1] में सुवालात के जवाबात देते हुए जो कुछ इर्शाद फ़रमाया उस का ख़ुलासा अपने अल्फ़ाज़ में पेशे ख़िदमत है चुनान्चे आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं कि जब मेरी शादी की सूरत बनी तो कोई रिश्ता देने के लिये तय्यार न होता था क्यूं कि उस वक़्त दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बहारें नहीं थीं और हमारे

---

1. मदनी मुज़ाकरा दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में उस इज्तिमाअ़ को कहते हैं जिस में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अ़क़ाइदो आ'माल, शरीअ़तो त़रीक़त, तारीख़ो सीरत, त़िबाबतो रूह़ानिय्यत वग़ैरा **मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त** पर पूछे गए सुवालात के जवाबात देते हैं । मदनी मुज़ाकरात की केसिटें, सीडीज़ और वीसीडीज़ मकतबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब कीजिये ।

मुआशरे में **दाढ़ी** सजाने वाले नौ जवान निहायत ही कमयाब थे। उस ज़माने में भी اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे चेहरे पर सुन्नत के मुताबिक़ एक मुश्त दाढ़ी थी। आख़िरे कार एक जगह रिश्ता तै हुवा, लेकिन चन्द दिनों बा'द उन्हों ने भी मंगनी तोड़ दी।

बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में इस्तिग़ासा

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : मंगनी टूट जाने पर मैं बहुत दिल बरदाश्ता हुवा और एक रात अपने मह़ल्ले की मस्जिद में बैठे बैठे **बारगाहे रिसालत** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में मन्ज़ूम इस्तिग़ासा पेश किया जिस में मज़्मून कुछ यूं था कि **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप की सुन्नत पर चलना चाहता हूं लेकिन लोग इस त़रह़ के त़र्ज़े अ़मल से मेरा दिल दुखाते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कुछ ही अ़र्से में एक और जगह रिश्ते की तरकीब बन गई और शादी भी हो गई।

उन के निसार कोई कैसे ही रन्ज में हो
जब याद आ गए हैं सब ग़म भुला दिये हैं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان हमारे मुआशरे में पाई जाने वाली इस तक्लीफ़ देह सूरते ह़ाल की अ़क्कासी करते हुए अपनी किताब "**इस्लामी ज़िन्दगी**" के सफ़ह़ा **36** ता **39** पर लिखते हैं : "मैं ने बहुत मुसल्मानों को कहते सुना कि हम **दाढ़ी** वाले को अपनी लड़की न देंगे, लड़का शौक़ीन चाहिये और बहुत जगह अपनी आंखों से देखा कि लड़की वालों ने दूल्हा से मुत़ालबा किया कि **दाढ़ी** मुंडवा दो तो लड़की दी जा सकती है, चुनान्चे लड़कों ने दाढ़ियां मुंडवाईं, कहां तक दुख की बातें सुनाऊं ? येह भी कहते सुना गया कि नमाज़ी को लड़की न देंगे, वोह मस्जिद का मुल्ला है, हमारी लड़की के अरमान और शौक़ पूरे न करेगा। लड़की वालों को चाहिये कि दूल्हा में तीन बातें देखें, **अव्वल** तन्दुरुस्त हो, क्यूं

कि ज़िन्दगी की बहार तन्दुरुस्ती से है। **दूसरे** उस के चाल चलन अच्छे हों, बद मआ़श न हो, शरीफ़ लोग हों, **तीसरे** येह कि लड़का हुनर मन्द और कमाउ हो कि कमा कर अपने बीवी और बच्चों को पाल सके। मालदारी का कोई ए'तिबार नहीं येह चलती फिरती चांदनी है। ह़दीसे पाक में है कि निकाह़ में कोई माल देखता है कोई जमाल। मगर عَلَيْكَ بِذَاتِ الدِّيْنِ (तुम दीनदारी देखो।) (صحیح مسلم، کتاب الرضاع، باب استحباب النکاح......الخ، الحدیث ۷۱۵، ص ۷۷۲) येह भी याद रखो कि मौलवियों और दीनदारों की बीवियां फ़ेशन वालों की बीवियों से ज़ियादा आराम में रहती हैं। अव्वल तो इस लिये कि दीनदार आदमी ख़ुदा तआ़ला के ख़ौफ़ से बीवी बच्चों का ह़क़ पहचानता है। दूसरे येह कि दीनदार आदमी की निगाह सिर्फ़ बीवी ही पर होती है और आज़ाद लोगों की टेम्परेरी (temporary या'नी आ़रिज़ी) बीवियां बहुत सी होती हैं। जिन का दिन रात तजरिबा हो रहा है। वोह फूल को सूंघता और हर बाग़ में जाता है। कुछ दिनों तो अपनी बीवी से मह़ब्बत करता है फिर आंख फेर लेता है।

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 36 ता 39, मुलख़्ख़सन)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त इ़ज़्ज़त देने वाला है

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तह़दीसे ने'मत के तौ़र पर फ़रमाते हैं कि) एक वक़्त था कि ख़ुद मुझे कोई रिश्ता देने को तय्यार न था और आज रब्बे अकरम عَزَّوَجَلَّ का ऐसा करम है कि **लोग मुझ से पूछ पूछ कर शादियां करते हैं** कि तुम कहो तो हम फ़ुलां जगह शादी कर दें। अल्लाह तआ़ला ही इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाने वाला है।

وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ
(پ ۳، آل عمران : ۲۶)

तर जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे।

(मदनी मुज़ाकरा नम्बर : 4)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शादियों में होने वाली बेहूदा रस्में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना हमारे मुआ़शरे में मंगनी और शादी के मौक़अ़ पर बा'ज़ ना जाइज़ और बेहूदा रुसूमात इस क़दर रवाज पा गई हैं कि इन के बिग़ैर तक़्रीबात को अधूरा समझा जाता है। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه शादी बियाह की तक़्रीबात में होने वाले गुनाहों की निशान देही करते हुए अपने रिसाले "**गाने बाजे की होल नाकियां**" में लिखते हैं :

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आजकल शादी जैसी मीठी मीठी सुन्नत बहुत सारे गुनाहों में घिर चुकी है, बेहूदा रुसूमात इस का **जुज़्वे ला युन्फ़क** बन चुकी हैं, مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़ालात इस क़दर अब्तर हो चुके हैं कि जब तक बहुत सारे ह़राम काम न कर लिये जाएं उस वक़्त तक अब शादी की सुन्नत अदा हो ही नहीं सकती। मसलन मंगनी ही की रस्म ले लीजिये इस में लड़का अपने हाथ से लड़की को अंगूठी पहनाता है ह़ालां कि येह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। शादी में मर्द अपने हाथ मेहंदी से रंगता है येह भी ह़राम है, मर्दों और औ़रतों की मख़्लूत़ दा'वतें की जाती हैं, या कहीं बराए नाम बीच में पर्दा डाल दिया जाता है मगर फिर भी औ़रतों में ग़ैर मर्द घुस कर खाना बांटते, ख़ूब विडियो फ़िल्में बनाते हैं[1] शौक़िया तस्वीरें बनाने और बनवाने वालों को अ़ज़ाबे ख़ुदा वन्दी से डर जाना चाहिये कि! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت नक़्ल करते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, **हर तस्वीर बनाने वाला जहन्नम में है और हर तस्वीर के बदले जो उस ने बनाई थी अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **एक मख़्लूक़ पैदा करेगा जो उसे अ़ज़ाब करेगी।**"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 427, रज़ा फ़ाउन्डेशन)

आह ! शादियों में ख़ूब फ़ेशन परस्ती का मुज़ाहरा किया जाता है, ख़ानदान की जवान लड़कियां ख़ूब नाचतीं, गातीं ऊधम मचाती हैं। इस दौरान

1. कसीर उ़लमाए किराम मज़्हबी बयानात वग़ैरा की विडियो को जाइज़ क़रार देते हैं।

मर्द भी बिला तकल्लुफ़ अन्दर आते जाते हैं, मर्द और औरतें जी भर कर बद निगाही करते हैं, ख़ूब आंखों का ज़िना होता है, न ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ न शर्मे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم । सुनो सुनो ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है, ''आंखों का ज़िना देखना और कानों का ज़िना सुनना और ज़बान का ज़िना बोलना और हाथों का ज़िना पकड़ना है।'' (مسلم شریف، ص١٤٢٨، حدیث٢٦٥٧) याद रखिये ! ग़ैर मर्द ग़ैर औरत को देखे या ग़ैर औरत ग़ैर मर्द को शह्वत से देखे येह ह़राम और दोनों के लिये येह जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं।

ना फ़रमानी की नुहूसत

फ़िल्मी रेकॉर्डिंग के बिग़ैर आजकल शायद ही कहीं शादी होती हो। अगर कोई समझाए तो बा'ज़ अवक़ात जवाब मिलता है, वाह साहिब ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पहली बच्ची की ख़ुशी दिखाई है और गाना बाजा न करें, बस जी **ख़ुशी** के वक़्त सब कुछ चलता है। (مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ) अरे नादानो ! **ख़ुशी के वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया जाता है** कि ख़ुशियां त़वील हों, ना फ़रमानी नहीं की जाती, कहीं ऐसा न हो कि इस ना फ़रमानी की नुहूसत से इक्लौती बेटी दुल्हन बनने के आठवें दिन रूठ कर **मयके** आ बैठे और मज़ीद आठ दिन के बा'द तीन **त़लाक़** का परचा आ पहुंचे और सारी ख़ुशियां धूल में मिल जाएं। या धूमधाम से नाच गानों की धमा चौकड़ी में बियाही हुई दुल्हन 9 माह के बा'द पहली ही ज़चगी में मौत के घाट उतर जाए। आह ! सद हज़ार आह !

मह़ब्बत ख़ुसूमात में खो गई   येह उम्मत रुसूमात में खो गई

शादी की ख़ुशी में गाने बजाने का गुनाह करने वालो ! कान खोल कर सुनो ! ह़दीसे पाक में है, ''दो आवाज़ों पर दुन्या व आख़िरत में ला'नत है, (1) ने'मत के वक़्त बाजा (2) मुसीबत के वक़्त चिल्लाना।'' (كنزالعمال، حديث ٤٠٦٥٤، ج١٥، ص٩٥ (गाने बाजे की होल नाकियां, स. 7 ता 13) دار الكتب العلميه)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ना जाइज़ रस्मों से पाक शादी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه शादी बियाह की ख़ुशी में होने वाली बेहूदा तक़रीबात को न सिर्फ़ ख़ुद ना पसन्द करते हैं बल्कि दीगर मुसल्मानों को भी इन **गुनाहों भरे मा'मूलात** से इज्तिनाब की शफ़्क़त आमेज़ ताकीद फ़रमा रहे हैं, तो भला कैसे मुम्किन था कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अपनी शादी में गुनाहों भरी **तक़रीबात** मुन्अ़क़िद की जातीं या ना जाइज़ रस्मों पर अ़मल किया जाता ! हरगिज़ नहीं बल्कि हमारा हुस्ने ज़न है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शादी फ़ुज़ूल व ना जाइज़ रस्मों से **पाक** और इन्तिहाई **सादगी का मज़्हर** रही होगी ।

बरकत वाला निकाह़

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है कि **नूर के पैकर,** तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुलत़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** "बड़ी बरकत वाला निकाह़ वोह है जिस में बोझ कम हो ।" (مسنداحمد ، الحديث ٢٤٥٨٣، ج٩، ص٣٦٥)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़ में इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं **:** "या'नी जिस **निकाह़** में फ़रीक़ैन का **ख़र्च** कम कराया जाए, **महर** भी मा'मूली हो, जहेज़ भारी न हो, कोई जानिब **मक़रूज़** न हो जाए, किसी त़रफ़ से शर्त़ सख़्त न हो, अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के तवक्कुल पर लड़की दी जाए वोह **निकाह़** बड़ा ही **बा बरकत** है ऐसी शादी **ख़ाना आबादी** है, आज हम ह़राम रस्मों, बेहूदा रवाजों की वजह से शादी को **ख़ाना बरबादी** बल्कि ख़ानहा (या'नी बहुत सारे घरों के लिये बाइसे) बरबादी बना लेते हैं । अल्लाह तआ़ला इस ह़दीसे पाक पर अ़मल की तौफ़ीक़ दे । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 11)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की **शादी मुबारक** की मुख़्तसर रूदाद पढ़िये और **ह़दीसे** पाक की **बरकतों** का खुली आंखों से नज़ारा कीजिये :

मस्जिद में निकाह़ हुवा

इस जदीद दौर में भी जगमग जगमग करते शादी हॉल के बजाए **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का निकाह़ मुस्तह़ब त़रीक़े पर **मस्जिद** में हुवा । मुफ़्तिये आ'ज़म ह़ज़रते मौलाना **मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى ने जुमुआ़ के दिन तक़रीबन **11:00 बजे आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का **निकाह़** पढ़ाया, जिस में लोगों की भारी ता'दाद ने शिर्कत की ।

मदनी फूल : (1) निकाह़ ख़्वां का आ़लिमे बा अ़मल होना मुस्तह़ब है । (मुलख़्ख़सन अज़ फ़तावा रज़विय्या, जिल्द पन्जुम, स. 33, 61) **(2)** निकाह़ का ए'लानिया त़ौर पर मस्जिद में और जुमुआ़ के दिन होना मुस्तह़ब है । (अगर लड़की के घर या किसी और जगह हो तब भी कोई ह़रज नहीं ।) (الدرالمختار، کتاب النکاح، ج٤، ص٧٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्रिस्तान व मज़ारे मुबारक की ह़ाज़िरी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शादी की ख़ुशी में सरशार दूल्हा इस दिन को यादगार बनाने के लिये क्या कुछ नहीं करता ? उस के अ़ज़ीज़ो व अक़ारिब की त़रफ़ से उ़मूमन गुनाहों से भरपूर वेराइटी **प्रोग्राम** मुन्अ़क़िद किये जाते हैं, त़रह़ त़रह़ की जाइज़ व ना जाइज़ रस्में निभाई जाती हैं । यूं दूल्हा की आंखों पर **ग़फ़्लत** की ऐसी पट्टी बंध जाती है कि उसे क़ब्र की **तन्हाइयां** याद रहती हैं न मैदाने मह़शर की **परेशानियां** ! मगर दूसरी जानिब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को देखिये कि अपनी **शादी** के दिन **क़ब्रिस्तान** भी जा रहे हैं और निराले अन्दाज़ से **फ़िक्रे आख़िरत** भी कर रहे हैं :

(चुनान्चे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **फ़रमाते हैं)** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ नमाज़े जुमुआ़ नूर मस्जिद में **मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी**

عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْھَادِی की इक़्तिदा में अदा की, क़ब्रिस्तान भी गया और ह़ज़रते सय्यिद **मुह़म्मद शाह दूल्हा** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी की सआ़दत भी ह़सालि हुई और अस्पताल जा कर अपने एक बहुत ही प्यारे दोस्त ग़ुलाम यासीन क़ादिरी रज़वी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) जो कि ख़ून के सरत़ान (Blood Cancer) के मरीज़ थे उन की **इयादत** भी की। उन्हों ने मुझे मब्लग़ 25 रुपै शादी का तोह़फ़ा इनायत फ़रमाया।[1]

ख़ुशी के मौक़अ़ पर ग़म के मुआ़मलात में ह़िस्सा लेना चाहिये ताकि ख़ुशियों के सबब इन्सान इतना न "**फूल**" जाए कि "**फट**" जाए। वैसे भी मेरा मुआ़मला ऐसा था कि **मेरे अन्दर ग़म की कैफ़िय्यात बहुत थीं** क्यूं कि मैं मरीज़ों और परेशान ह़ालों से मिलता रहता था, बेचारों की लाचारी से बड़ी इब्रत मिलती है। **इस त़रह़ से मैं ने अपनी शादी के दिन के अवक़ात मज़्कूरा अन्दाज़ पर गुज़ारने की सआ़दत ह़ासिल की।**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदनी फूल : ज़ियारते क़ुबूर **मुस्तह़ब** है हर हफ़्ते में एक दिन ज़ियारत करे, जुमुआ़ या जुमा'रात या हफ़्ता या पीर के दिन मुनासिब है, सब में **अफ़्ज़ल** रोज़े जुमुआ़ वक़्ते सुब्ह़ है। औलियाए किराम के **मज़ाराते त़य्यिबा पर सफ़र कर के जाना जाइज़ है,** वोह अपने ज़ाइर को नफ़्अ़ पहुंचाते हैं और अगर वहां कोई मुन्करे शरई हो मसलन औ़रतों से इख़्तिलात़ तो उस की वजह से ज़ियारत तर्क न की जाए कि ऐसी बातों से नेक काम तर्क नहीं किया जाता, बल्कि उसे बुरा जाने और मुम्किन हो तो बुरी बात ज़ाइल करे। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 197)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1. कुछ दिन के बा'द ग़ुलाम यासीन क़ादिरी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْھَادِی का इन्तिक़ाल हो गया। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपनी अम्मीजान (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا) के मज़ार से मुल्ह़िक़ बनाया हुवा चबूतरा मर्ह़ूम की क़ब्र के लिये पेश कर दिया। आज भी अम्मीजान (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا) के पहलू में मर्ह़ूम की क़ब्र मौजूद है।

नमाज़ों की बा जमाअ़त अदाएगी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शादी की तक़रीबात में मस्रूफ़ हो कर अक्सर लोग अपनी नमाज़ें **क़ज़ा** कर बैठते हैं, मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने शादी होने के बा'द भी ह़स्बे आ़दत नमाज़े जुमुआ़, अ़स्र, मग़रिब और इशा **बा जमाअ़त** अदा की।

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **फ़रमाते हैं) रब** عَزَّوَجَلَّ के करम से शुरूअ़ से ही बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने का ज़ेहन था, **जमाअ़त तर्क कर देना मेरी लुग़त में ही नहीं था**। यहां तक कि जब मेरी वालिदए मोह़तरमा का इन्तिक़ाल हुवा तो उस वक़्त घर में दूसरा कोई मर्द न था, मैं अकेला था मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मां की मय्यित छोड़ कर मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने की सआ़दत पाई। मां के ग़म में दौराने नमाज़ मेरे आंसू ज़रूर बह रहे थे, मगर इस सूरते ह़ाल में भी اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जमाअ़त न छोड़ी। इसी त़रह़ शादी वाले दिन भी **तमाम नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करने की सआ़दत ह़ासिल हुई**।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पैग़ामे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه (रिसाला फ़ातिह़ा का त़रीक़ा स. **24**, मत़्बूआ़ मकतबतुल मदीना) में तह़रीर फ़रमाते हैं : **ख़बरदार** जब भी आप के यहां (शादी), नियाज़ या किसी क़िस्म की तक़रीब हो, नमाज़ का वक़्त होते ही कोई मानेए़ शरई न हो तो इन्फ़िरादी व इज्तिमाई कोशिश के ज़रीए़ तमाम मेहमानों समेत **नमाज़े बा जमाअ़त के लिये मस्जिद का रुख़ करें**। बल्कि ऐसे अवक़ात में दा'वत ही न रखें कि बीच में नमाज़ आए और गहमा गहमी या सुस्ती के बाइ़स مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जमाअ़त फ़ौत हो जाए। दो पहर के खाने के लिये फ़ौरन **बा'दे नमाज़े ज़ोहर** और शाम के खाने के लिये **बा'दे नमाज़े इशा**

मेहमानों को बुलाने में ग़ालिबन बा जमाअ़त नमाज़ों के लिये आसानी है। **मेज़बान, बावर्ची, खाना तक़्सीम करने वाले वग़ैरा** सभी को चाहिये कि वक़्त हो जाए तो सारा काम छोड़ कर बा जमाअ़त नमाज़ का एहतिमाम करें। शादी या दीगर तक़रीबात वग़ैरा और **बुज़ुर्गों की "नियाज़" की मस्रूफ़िय्यत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की (हुक्म कर्दा) "नमाज़े बा जमाअ़त" में कोताही बहुत बड़ी ग़लती है।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी दा'वत नामा

एक मरतबा मदनी मुज़ाकरे के दौरान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से अ़र्ज़ की गई कि हुज़ूर ! आप ने शादी का दा'वत नामा सब से पहले किस के नाम लिखा ? तो कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जब से होश संभाला **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सदक़े से मेरी मह़ब्बतें **सरकार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये ही हैं, यक़ीनन सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हर मुसल्मान को मह़ब्बत है और होनी भी चाहिये कि "**لَا اِيْمَانَ لِمَنْ لَا مَحَبَّةَ لَه**" (या'नी जिसे सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत नहीं उस का ईमान कामिल नहीं) हर एक की मह़ब्बत का अपना अन्दाज़ होता है, मेरा भी **सरकार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत का एक अन्दाज़ था कि मैं चाहता था कि **सरकार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में दा'वत पेश करूं। **लेकिन सोचता था कि कैसे पेश करूं ?** मैं मुसल्सल येह सोचता रहा फिर आख़िरे कार मुझ से जो मुम्किन हुवा मैं ने शादी कार्ड पर **अल्क़ाबात** लिखे और एक मदीने के मुसाफ़िर के हाथ "**शादी कार्ड**" मदीने शरीफ़ भेज दिया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ एक इस्लामी भाई ने सुनहरी जालियों के सामने पढ़ कर सुनाया। **निकाह़** वाले दिन मेरी अ़जीब कैफ़िय्यत थी मैं मुज़्तरिब था कि मेरे **मीठे मीठे, मन मोहने, आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **कब तशरीफ़ लाते हैं ?** बस येह मेरा एक अन्दाज़ था।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शबे उ़रूसी में इन्फ़िरादी कोशिश

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : शादी की मस्रूफ़िय्यात में दिन गुज़ार कर जब शबे उ़रूसी का वक़्त हुवा तो मेरे अन्वर[1] **(Side friend)** ने मुझे समझाना शुरूअ़ किया कि अगर तुम्हारी अहलिया उलटे हाथ से कोई चीज़ दे तो पहली रात ही रोक टोक शुरूअ़ मत कर देना (क्यूं कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बहुत पुरानी आ़दते मुबारका है कि जब कोई आप को उलटे हाथ से चीज़ पकड़ाने की कोशिश करे तो आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बड़े अह़्सन अन्दाज़ में उस की इस्लाह़ फ़रमा देते हैं कि सीधे हाथ से चीज़ दीजिये कि सुन्नत है उलटे हाथ से देना शैत़ान का काम है।) चूंकि वोह मेरी कैफ़िय्यत से वाक़िफ़ थे, इसी के पेशे नज़र फिर समझाया कि "तुम ह़ुसूले इ़ब्रत के लिये मौत की बातें करते रहते हो, पहली ही रात उस के सामने **मौत का तज़्किरा** मत छेड़ देना।" मैं ख़ामोशी से सुनता रहा।

इत्तिफ़ाक़न जब रात नौ बियाहता ने उलटे हाथ से कोई चीज़ देना चाही तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़स्बे आ़दत सीधे हाथ से देने की **तल्क़ीन** की नीज़ वोही **मौत का तज़्किरा** किया कि देखो येह खुशियां जो हैं, येह सब आ़रिज़ी हैं, **मौत** तो दूल्हा को बारात से घसीट कर ले जाती है और दुल्हन को ह़जलए उ़रूसी से उठा कर क़ब्र में डाल देती है। इस त़रह़ उन का मदनी ज़ेह्न बनाने की कोशिश की।

नेल पॉलिश क्यूं नहीं लगाई ?

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मज़ीद फ़रमाते हैं कि मैं ने (नाख़ुनों को देखते हुए) पूछा : "**नेल पॉलिश** कहां है ?" कहा : "नहीं लगाई।"

---

1 : अन्वर उस शख़्स को बोलते हैं जो अपने तजरिबात की रोशनी में दूल्हा को ख़रीदारी और दीगर मुआ़मलात में अपने मश्वरों से नवाज़ता है।

पूछा : "क्यूं ?" कहा कि "**वुज़ू** नहीं होता।" येह सुन कर मेरा दिल बहुत ख़ुश हुवा कि مَاشَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इन का पहले से ही ज़ेह्न बना हुवा है। वरना मैं ने **नेल पॉलिश** उतारने वाला लोशन ले रखा था कि अगर **नेल पॉलिश** लगाई हुई तो साफ़ कर दूंगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस के **इस्ति'माल** की ज़िन्दगी में कभी **नौबत** ही नहीं आई।

मदनी फूल : ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللہِ الْغَنِی लिखते हैं : आजकल (औ़रतों में) नाख़ुन पर पॉलिश लगाने का रवाज है मगर पॉलिश में जसामत होती है इस लिये अगर नाख़ुनों पर लगी होगी तो औ़रत का **वुज़ू या ग़ुस्ल न होगा** कि पॉलिश के नीचे पानी न पहुंचेगा। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 175) लिहाज़ा अगर नेल पॉलिश नाख़ुनों पर लगी हुई हो तो इस का छुड़ाना फ़र्ज़ है वरना वुज़ू व ग़ुस्ल नहीं होगा।

(इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 54)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शबे उ़रूसी में बयान की केसिट सुनी !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की येह इन्फ़िरादी कोशिश बहुत से इस्लामी भाइयों के लिये मश्अ़ले राह बनी, चुनान्चे जामिअ़तुल मदीना के एक त़ालिबे इल्म का बयान कुछ यूं है कि 15 ज़ी क़ा'दह 1425 सि.हि. में (कि जब मैं दरजए ख़ामिसा का त़ालिबे इल्म था) अपनी **शादी** के मौक़अ़ पर मैं ने रहनुमाई के लिये **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी मौलाना मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी अल मदनी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللہِ الْغَنِی जो कि मेरे उस्ताज़ भी थे, उन से कुछ शरई मसाइल पूछे जिस के जवाबात देने के बा'द आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे शबे उ़रूसी में केसिट **इज्तिमाअ़** की तरग़ीब दिलाई कि इस त़रह़ आप दोनों को रहनुमाई के मुतअ़द्दद मदनी फूल मिलेंगे। चुनान्चे मैं ने शबे उ़रूसी की इब्तिदा में अपनी दुल्हन के साथ बैठ कर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के बयान की

केसिट **"मियां बीवी के हुक़ूक़"** सुनी जिस से हमें मा'लूमात का **अनमोल ख़ज़ाना** हाथ आया ।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बारगाहे रिसालत में सलातो सलाम पेश किया

दा'वते इस्लामी के तह़क़ीक़ी व इशाअ़ती इदारे अल मदीनतुल इल्मिय्या से वाबस्ता एक मदनी इस्लामी भाई ने भी मदनी मुज़ाकरे में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की येही ह़िकायत सुन कर अपना ज़ेह्न बनाया और शबे ज़िफ़ाफ़ में सब से पहले अपनी दुल्हन के साथ मिल कर बारगाहे रिसालत (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) में **सलातो सलाम** का नज़राना पेश किया और **दुआ़** भी मांगी ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नमाज़े फ़ज्र की बा जमाअ़त अदाएगी

(**अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मज़ीद फ़रमाते हैं कि) **"अन्वर"** ने मश्वरा दिया था कि शबे ज़िफ़ाफ़ गुज़ार कर नमाज़े फ़ज्र घर ही पर अदा कर लेना मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शबे ज़िफ़ाफ़ की सुब्ह़ **मस्जिदे नूर** (जहां इमामत की ज़िम्मेदारी थी) **में नमाज़े फ़ज्र की इमामत की सआ़दत पाई** । फिर जब "अन्वर" से मुलाक़ात हुई तो उस ने बड़ा तअ़ज्जुब किया कि शादी की पहली रात गुज़ार कर फ़ज्र पढ़ाई ! येह कैसे पढ़ाई ? मैं ने कहा : "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पढ़ाई और कोई ग़लती भी नहीं हुई, येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम है ।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दूल्हा और दुल्हन के लिये दुआ़इय्या मन्ज़ूम मदनी सेहरे और इस्लाह़ के मदनी फूलों पर मुश्तमिल सुन्नतों भरे **मक्तूबात** भी मुरत्तब फ़रमाए हैं । येह मदनी सेहरे और मक्तूबात इसी रिसाले के आख़िरी सफ़ह़ात में पेश किये गए हैं ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत में उन दूल्हा साहिबान के लिये दर्स पोशीदा है जो **नमाज़** के पाबन्द होते हुए भी **शबे उरूसी** में शर्मो ह़या की वजह से गुस्ल नहीं करते और नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा कर देते हैं (مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) ह़ालां कि ऐसा करना शर्मो ह़या नहीं बल्कि परले दरजे की **ह़माक़त** और **ह़राम** और **जहन्नम में ले जाने** वाला काम है।

अमीरे अहले सुन्नत का वलीमा

उन दिनों में भी कि जब टेबल कुर्सियां सजा कर बड़े कर्रो फ़र के साथ वलीमे किये जाते थे, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का वलीमा शबे ज़िफ़ाफ़ के दूसरे दिन सुन्नत के मुत़ाबिक़ ऐसी सादगी के साथ हुवा था कि जिस त़रह़ **नियाज़** वग़ैरा में खिलाया जाता है इसी त़रह़ मेहमानों को दरी पर बिठा कर थालों में खाना पेश किया गया। खाने में सिर्फ़ अक्नी **चावल** (या'नी पुलाव) और ज़र्दा था। **मकान** के बैरूनी हिस्से पर किसी क़िस्म की मुरव्वजा **सजावट या बर्क़ी क़ुमक़ुमों** की तरकीब न थी, टेप पर सिर्फ़ **ना'तें** चलाने का सिलसिला था।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"वलीमा सुन्नत है" के दस हुरूफ़ की निस्बत से वलीमा के 10 मदनी फूल

(अज़ : शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ)

(1) दा'वते वलीमा **सुन्नत** है। वलीमा येह है कि शबे ज़िफ़ाफ़ की सुब्ह़ को अपने दोस्त अह़बाब अ़ज़ीज़ो अक़ारिब और मह़ल्ले के लोगों की ह़स्बे इस्तित़ाअ़त **ज़ियाफ़त** करे।

(2) वलीमे के लिये बहुत ज़ियादा भीड़ करना **शर्त़** नहीं है, दो तीन दोस्त या रिश्तेदार हों तो भी वलीमा हो सकता है।

(3) इस के लिये पन्दरह क़िस्म की डिशें बनाने की भी कोई ज़रूरत

नहीं, ह़स्बे ह़ैसिय्यत दाल चावल या गोश्त वग़ैरा जो भी **खाना** आप पेश कर सकते हैं, पेश कर दीजिये **वलीमा** हो जाएगा।

(4) जो लोग वलीमे में बुलाए जाएं उन को **जाना चाहिये** कि उन का जाना दूल्हा और उस के घर वालों के लिये **मुसर्रत** का बाइ़स होगा।

(5) दा'वते वलीमा का येह हु़क्म जो बयान किया गया है, उस वक़्त है कि दा'वत करने वालों का मक़्सूद **अदाए सुन्नत** हो और अगर मक़्सूद तफ़ाख़ुर (या'नी फ़ख़्र जताना) हो या येह कि मेरी **वाह वाह** होगी जैसा कि इस ज़माने में अक्सर येही देखा जाता है, तो ऐसी दा'वतों में न शरीक होना **बेहतर** है ख़ुसूसन अहले इ़ल्म को ऐसी जगह न जाना चाहिये।

(6) दा'वत में जाना उस वक़्त सुन्नत है जब मा'लूम हो कि वहां **गाना बजाना, लह्वो लइ़ब** नहीं है और अगर मा'लूम है कि येह **ख़ुराफ़ात** वहां हैं तो न जाए।

(7) जाने के बा'द मा'लूम हुवा कि यहां लग़्विय्यात हैं, अगर वहीं येह चीज़ें हों तो **वापस** आए और अगर मकान के दूसरे हि़स्से में हैं जिस जगह खाना खिलाया जाता है वहां नहीं हैं तो वहां **बैठ** सकता है और खा सकता है फिर अगर येह शख़्स उन लोगों को रोक सकता है तो **रोक** दे और अगर इस की क़ुदरत उसे न हो तो सब्र करे।

(8) येह इस सूरत में है कि येह शख़्स मज़्हबी पेश्वा न हो और अगर **मुक़्तदा** व पेश्वा हो, मसलन उ़लमा व मशाइख़, येह अगर न रोक सकते हों तो वहां से **चले** आएं न वहां बैठें न खाना खाएं और पहले ही से येह मा'लूम हो कि वहां येह चीज़ें हैं तो **मुक़्तदा** हो या न हो किसी को जाना **जाइज़** नहीं अगर्चे ख़ास उस हि़स्सए मकान में येह चीज़ें न हों बल्कि दूसरे हि़स्से में हों।

(9) अगर वहां **लह्वो लइ़ब** हो और येह शख़्स जानता है कि मेरे जाने से येह चीज़ें **बन्द** हो जाएंगी तो उस को इस निय्यत से जाना चाहिये कि उस के जाने से मुन्कराते शरइ़य्या (या'नी गुनाहों के काम) रोक दिये जाएंगे और अगर मा'लूम है कि वहां न जाने से उन लोगों को नसीह़त होगी और ऐसे मौक़अ़ पर येह **ह़रकतें** न करेंगे, क्यूं कि वोह लोग इस की शिर्कत को ज़रूरी जानते हैं और जब येह मा'लूम होगा कि अगर शादियों और तक़रीबों में येह चीज़ें होंगी तो

वोह शख़्स **शरीक** न होगा तो उस पर लाज़िम है कि वहां न जाए ताकि लोगों को **इब्रत** हो और ऐसी ह़रकतें न करें।

(10) **दा'वते वलीमा** सिर्फ़ पहले दिन है या उस के बा'द दूसरे दिन भी या'नी दो[2] ही दिन तक येह **दा'वत** हो सकती है, इस के बा'द वलीमा और शादी ख़त्म। पाक व हिन्द में **शादियों** का सिल्सिला कई दिन तक क़ाइम रहता है। सुन्नत से आगे बढ़ना **रिया व सुम्आ़** है इस से बचना ज़रूरी है।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 34 ता 36)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चटाई की सुन्नत

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं) **मैं** ने येह पढ़ और सुन रखा था कि **सरकार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चटाई बल्कि फ़र्शे ख़ाक पर सोते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बरसों से मेरी चटाई पर सोने की आ़दत थी। शादी की पहली रात के बा'द मैं फिर अपनी **चटाई** पर था। पलंग आहिस्ता आहिस्ता स्टोर रूम में मुन्तक़िल हो गया और इस के बा'द घर का फ़ाज़िल सामान पलंग पर रख दिया गया। अब भी हमारे घर में **सोफ़ा** सेट है न **पलंग**, हां घर की बालाई मन्ज़िल में जो **किताब घर** है वहां एक सोफ़ा मौजूद है जिस पर मैं कभी कभी बैठ जाता हूं, इस्लामी भाइयों में से किसी ने ला कर रख दिया, अपने उस मेहरबान का नाम अब भी मुझे नहीं मा'लूम।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जहेज़ के हुक़ूक़

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने एक बार फ़रमाया, चूंकि जहेज़ शरई तौ़र पर बीवी की मिल्क होता है इस लिये मैं ने अपने बच्चों की वालिदा से एक बार नहीं बल्कि मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर जहेज़ से मुतअ़ल्लिक़

हुक़ूक़ मुआ़फ़ करवाएं हैं। एक बार एक चुटकुला यूं हुवा कि मैं ने बच्चों की वालिदा से जहेज़ से मुतअ़ल्लिक़ जब **एह़तियात़न मुआ़फ़ी** मांगी तो उन्हों ने कहा : **''एक बार मुआ़फ़ कर तो दिया अब कब तक मुआ़फ़ी मांगते रहेंगे ?''**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ को एक बेटी और दो बेटों से नवाज़ा है। बेटों के नाम (1) अल्ह़ाज मौलाना अबू उसैद **अह़मद उ़बैद रज़ा क़ादिरी** रज़वी अ़त्तारी अल मदनी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی और (2) ह़ाजी **मुह़म्मद बिलाल** रज़ा अ़त्तारी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی हैं। **अल्लाह** तआ़ला इन को दराज़िये उ़म्र बिलख़ैर और दिन रात दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की धूमें मचाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शहज़ादए अ़त्तार مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی की शादी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपनी शादी ख़ाना आबादी में हर मौक़अ़ पर शरई अह़काम की पासदारी की, वहीं आप ने अपने शहज़ादए ख़ुश लिक़ा, उ़रूसे दिलरुबा, अलह़ाज मौलाना अबू उसैद **अह़मद उ़बैदुर्रज़ा क़ादिरी** रज़वी अ़त्तारी अल मदनी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की **''शादी''** के पुर मुसर्रत लम्ह़ात में तमाम मुआ़मलात शरीअ़त के ऐ़न मुत़ाबिक़ रखने पर भी भरपूर तवज्जोह फ़रमाई। जिस के नतीजे में اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह शादी मुबारक भी इन्तिहाई सादगी का मज़्हर और दौरे ह़ाज़िर की मिसाली शादी क़रार पाई।

मरह़बा अ़त्तार का लख़्ते जिगर दूल्हा बना
ख़ुशनुमा सेहरा उ़बैदे क़ादिरी के सर सजा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तक़रीबे निकाह़

शहज़ादए अ़त्तार مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के **निकाह़** की तक़रीब बर्क़ी क़ुमक़ुमों से जगमगाते शादी हॉल के बजाए **मदीनतुल औलिया** में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़ में 18** अक्तूबर **2003** सि.ई. को शबे इतवार बड़ी सादगी के साथ अन्जाम पाई।

बराती हैं तमामी अहले सुन्नत — उ़बैदे क़ादिरी दूल्हा बना है

तिलावत के बा'द पुरसोज़ ना'तें पढ़ी गईं, रिक्क़त अंगेज़ समां था, ख़ुत़्बए निकाह़ पढ़ कर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ही ने निकाह़ पढ़ाया फिर छूहारे लुटाए गए जो मन्च (स्टेज) के क़रीब मौजूद मख़्सूस इस्लामी भाइयों ने लूटे। निकाह़ के बा'द छूहारे लुटाने के बारे में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ''ह़दीस शरीफ़ में लूटने का हुक्म है और लुटाने में भी कोई ह़रज नहीं। (अह़कामे शरीअ़त, स. 232)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रुख़्सती की तारीख़

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का यौमे विलादत **10 शव्वालुल मुकर्रम** है लिहाज़ा इस निस्बत की बरकतों के ह़ुसूल के लिये रुख़्सती की तक़रीब **शव्वालुल मुकर्रम 1426** सि.हि., **2005** सि.ई. की दसवीं शब रखी गई।

मैं इमाम अह़मद रज़ा का हूं ग़ुलाम — कितनी आ'ला मुझ को निस्बत मिल गई

(मुग़ीलाने मदीना)

मकान पर सजावट

इस मौक़अ़ पर देखने वाले ह़ैरत ज़दा थे कि दुन्याए अहले सुन्नत के अमीर, बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के शहज़ादे की शादी के मौक़अ़ पर घर पर मुरव्वजा **सजावट या बर्क़ी क़ुमक़ुमों** वग़ैरा की कोई **तरकीब** ही नहीं थी।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पुर तकल्लुफ़ जहेज़ लेने से इन्कार

हाजी अह़मद उ़बैद रज़ा مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की शादी में जब लड़की वालों ने पुर तकल्लुफ़ जहेज़ देना चाहा तो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उन्हें सादगी अपनाने की तल्क़ीन की। दूसरी त़रफ़ **शहज़ादए अ़त्तार** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी पलंग वग़ैरा की बजाए चटाई क़बूल करने पर रिज़ा मन्द हुए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त

शहज़ादए अ़त्तार مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की शादी की ख़ुशी में **दा'वते इस्लामी** की मजलिसे मुशावरत ने मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** का एहतिमाम किया जिस में हज़ारों इस्लामी भाइयों ने शिर्कत की। इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त का आग़ाज़ **तिलावते क़ुरआने ह़कीम** से हुवा, फिर **सरकारे मदीना**, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में गुलहाए अ़क़ीदत **ना'त** शरीफ़ की सूरत में पेश किये गए। इस के बा'द शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस मौक़अ़ पर **मदनी मुज़ाकरा** में इस्लामी भाइयों के सुवालात के जवाबात दिये। फिर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का लिखा हुवा मन्ज़ूम दुआ़इय्या सेहरा शरीफ़ पढ़ा गया और **सलातो सलाम** पर इस **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** का इख़्तिताम हुवा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

छूहारे क्यूं नहीं बांटे ?

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : मुझ से इसरार किया गया कि इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त के शुरका में कोई **चीज़** तक़्सीम की जाए, किसी ने येह मश्वरा भी दिया कि **चल मदीना** के 7 हुरूफ़ की निस्बत से सात सात छूहारों पर मुश्तमिल पेकेट तक़्सीम कर दिये जाएं, इस के नुमूने (सेम्पल, sample) भी आ गए थे मगर मैं ने **मन्अ़** कर दिया इस लिये

नहीं कि **रक़म** बहुत ख़र्च होती बल्कि येह सोच कर कि येह छूहारे हम बांटेंगे किस जगह ? अगर **मस्जिद** में बांटते हैं तो रश की वजह से मस्जिद में शोरो गुल होगा जो **एह़तिरामे मस्जिद** के मुनाफ़ी है और अगर बाहर बांटते हैं तो रास्ते बन्द हो जाने का ख़दशा है जिस से गुज़रने वालों की **ह़क़ तलफ़ी** होगी। फिर अ़वाम के जम्मे ग़फ़ीर को **क़ाबू** करना बेह़द मुश्किल है, छीना झपटी में ज़ोरआवर तो शायद कई कई पेकिट ले उड़े मगर जो बेचारा कमज़ोर होगा हुजूम में पिस कर रह जाए, लिहाज़ा समझ नहीं पड़ती थी कि कहां बांटें ? चुनान्चे तै़ हुवा कि **छूहारे नहीं बांटे जाएंगे।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ और आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की तशरीफ़ आवरी

एक इस्लामी भाई का बयान है कि इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त के आख़िरी लम्ह़ात में जब मन्च पर **शहज़ादए अ़त्तार** مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ तशरीफ़ फ़रमा थे और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का तह़रीर कर्दा मन्ज़ूम दुआ़इय्या सेहरा पढ़ा जा रहा था। (जिस के अश्आ़र सफ़ह़ा 45 पर पेश किये गए हैं।) उन इस्लामी भाई का कहना है कि इस दौरान मेरी आंख लग गई, क्या देखता हूं कि दो बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए, मुझे बताया गया कि इन में एक **हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ और दूसरे आ'ला ह़ज़रत इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن हैं। फिर दोनों बुज़ुर्गों ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ और **शहज़ादए अ़त्तार** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के गले में हार पहनाए।

इन की शादी ख़ाना आबादी हो रब्बे मुस्त़फ़ा
अज़ पए ग़ौसुल वरा बहरे इमाम अह़मद रज़ा

(अरमुग़ाने मदीना)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रस्मे रुख़्सती

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने पहले ही से ताकीद कर दी थी कि किसी सूरत में कोई ग़ैर शरई रस्म या मुआ़मला न होने पाए बल्कि वक़्ते रुख़्सती भी तमाम मुआ़मलात ऐ़न शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए होने चाहिऐं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप की इस ख़्वाहिश को अ़मली जामा पहनाया गया और आख़िर तक हर हर मुआ़मला ऐ़न **शरीअ़त** के मुत़ाबिक़ रखने की ही कोशिश की गई। ह़त्ता कि **रुख़्सती** के वक़्त जो ख़वातीन दुल्हन को छोड़ने के लिये रस्म के त़ौर पर आती हैं उस से पेशगी मन्अ़ कर दिया गया कि सिर्फ़ दुल्हन का सगा भाई शरई **पर्दे** के साथ दुल्हन को ले आए। इस शादी में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के घर वालों की त़रफ़ से भी इस्लामी बहनों के लिये कोई तक़रीब नहीं रखी गई थी।

मेरी जिस कदर हैं बहनें सभी काश बुर्क़अ़ पहनें
हो करम शहे ज़माना मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र

शबे ज़िफ़ाफ़ की सुब्ह़ शहज़ादए अ़त्तार **ह़ाजी अह़मद उ़बैद रज़ा** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में ह़स्बे मा'मूल **नमाज़े फ़ज्र** पढ़ाई। इस त़रह़ उन्हों ने अपने वालिद या'नी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की रिवायत को बर क़रार रखा कि उन्हों ने भी शबे ज़िफ़ाफ़ की सुब्ह़ मस्जिदे नूर **में नमाज़े फ़ज्र की ह़स्बे मा'मूल इमामत फ़रमाई थी।**

नमाज़ों में मुझे सुस्ती न हो कभी आक़ा
पढ़ूं पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त या रसूलल्लाह

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

धूमधाम से वलीमा करने का मुत़ालबा

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने मदनी मुज़ाकरे के दौरान कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : धूमधाम से **वलीमे** का भी बहुत इसरार रहा। किसी ने ऑफ़र

भी की, कि 200 देगें बिला उजरत पका देंगे, बस **दो लाख** रुपै का सामान आएगा। मैं ने कहा : **दो लाख** रुपै तो मेरे पास नहीं हैं, मगर मेरे लिये **दो लाख** रुपै जम्अ़ करना मुश्किल भी नहीं है, बस येही होगा कि जिस से कहूंगा उस के दिल में मेरी जो इ़ज़्ज़त होगी वोह **ख़त्म** हो जाएगी, दो चार सेठों को फ़ोन कर दूंगा, थोड़ी सी **ख़ुशामद** करना पड़ेगी जो कि **मेरे मिज़ाज में नहीं है,** 200 की जगह 1200 देगें हो जाएंगी, यूं मेरे बेटे का वलीमा तो धूमधाम से होगा और आप लोग भी ख़ुश हो जाएंगे मगर मुझे इस के लिये अपनी ख़ुद्दारी का सौदा करना पड़ेगा। फिर आप ने बत़ौरे तरग़ीब एक वाक़िआ़ भी सुनाया :

एक पीर साह़िब के हां लंगर ख़ाना चल रहा था। एक साह़िबे सरवत मुरीद पैसे देने की तरकीब कर रहा था। लंगर ख़ाने के मुन्तज़िम ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! अब महंगाई बढ़ गई है, बहुत दिक़्क़त हो रही है, अगर आप इस लंगर ख़ाने का ख़र्चा देने वाले **मुरीद** को इशारा कर देंगे कि वोह रक़म **दुगनी** कर दे तो अपना लंगर ख़ाना ज़रा आसानी से चलेगा। पीर साह़िब इस पर राज़ी हो गए और उस **मुरीद** को फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने तुझे बहुत दिया है, तुम माहाना चन्दा दुगना कर दो। उस मुरीद ने सआ़दत मन्दी से जवाब दिया : मुर्शिद आप का हुक्म सर आंखों पर। कुछ अ़र्से के बा'द लंगर ख़ाने के मुन्तज़िम ने पूछा, हुज़ूर ! आप ने रक़म में इज़ाफ़े के लिये कहा या नहीं ? पीर साह़िब ने फ़रमाया कि मैं ने उस से कह दिया था और उस ने दुगना भी कर दिया है मगर फ़र्क़ येह है पहले बड़ी अ़क़ीदत से आ कर पेश करता था, अब ख़ुद नहीं आता भिजवा देता है।

(फिर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया) اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरा बेटा (या'नी ह़ाजी अह़मद उ़बैद रज़ा अ़त्तारी سَلَّمَهُ الْغَنِی) ख़ुद **वलीमा** की सुन्नत अदा करेगा। धूमधाम से न सही मगर वलीमा होगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते वलीमा

शहज़ादए अ़त्तार مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

की ह़स्बे ख़्वाहिश इन्तिहाई सादगी से दा'वते वलीमा का एहतिमाम फ़रमाया जिस में सिर्फ़ दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के तमाम अराकीन और तीन या चार दूसरे इस्लामी भाइयों को मद्ऊ़ किया लेकिन खाने के वक़्त घर के बाहर जम्अ़ होने वाले दीगर अ़क़ीदत मन्द इस्लामी भाइयों को भी अन्दर बुलवा लिया गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी वलीमे में शरीक थे। दा'वते वलीमा में **दाल** और **चावल** पेश किये गए। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बताया कि "खाना घर में पकाया गया है, दाल **पानी** में पकाई गई है और इस में **तेल** का एक क़त़रा भी नहीं डाला गया।" मगर खाने वालों का कहना है कि दाल चावल ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर इन्तिहाई **लज़ीज़** थे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शहज़ादए अ़त्त़ार को मिलने वाले तह़ाइफ़

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ से दी गई मदनी सोच के बाइ़स दुन्या भर से इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों ने दुन्यवी तह़ाइफ़ के बजाए बहुत से नेक आ'माल मसलन **हज़ारों क़ुरआने पाक, दुरूदे पाक** और मुख़्तलिफ़ **अज़्कार, मदनी इन्आ़मात** और कई इस्लामी भाइयों ने **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने और दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के सवाब के तोह़फ़े पेश किये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक लाख रुपै का चेक लौटा दिया

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुक़द्दस घराना दुन्यवी माल से किस क़दर अपना दामन बचाता है ? इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि माली तोह़फ़े देने से **मन्अ़** करने के बा वुजूद जब एक इस्लामी भाई ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में **शहज़ादए हुज़ूर** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي के लिये 100000/ (एक लाख रुपै) का चेक बत़ौरे तोह़फ़ा भिजवाया तो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने शुक्रिया के साथ वापस करते हुए तह़रीरी पैग़ाम भेजा कि

बराए करम ! दोबारा इस के लिये इसरार न फ़रमाएं । बा'द अज़ां चेक देने वाले इस्लामी भाई के घर वालों की त़रफ़ से **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के घर उन की बड़ी हमशीरा के पास **एक लाख रुपै नक़्द** पहुंचाने की कोशिश की गई मगर वहां भी उन्हें मायूसी हुई क्यूं कि उन्हों ने भी रक़म लेने से मा'ज़िरत कर ली और शुक्रिया के साथ पैसे वापस कर दिये ।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की हमशीरा का कहना है कि जब मैं ने **ह़ाजी अह़मद उ़बैद रज़ा** को 100000/ रुपै के तोह़फ़े के बारे में बताया तो शहज़ादे ने बताया : ''चेक की सौग़ात सब से पहले मेरे पास ही पहुंची थी मगर मेरे इन्कार करने पर ही उन्हों ने बापाजान, फिर आप की ख़िदमत में पेश करने की कोशिश की ।''

न मुझ को आज़्मा दुन्या का मालो ज़र अ़त़ा कर के
अ़त़ा कर अपना ग़म और चश्मे गिर्यां या रसूलल्लाह

(अरमुग़ाने मदीना)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पसन्द का तोह़फ़ा

निगराने शूरा سَلَّمَهُ رَبُّ الْوَرٰى ने बताया कि मुझे कई मुख़य्यर ह़ज़रात के फ़ोन आए जिन का करोड़ों का कारोबार है कि हम **शहज़ादए हुज़ूर** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़िदमत में उन की पसन्द का तोह़फ़ा पेश करना चाहते हैं, मेहरबानी फ़रमा कर **शहज़ादए हुज़ूर** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي से मा'लूम कर के बता दें । जब मैं ने **शहज़ादए अ़त्तार** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में तोह़फ़े से मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ की तो उन्हों ने मन्अ़ करते हुए फ़रमाया कि अगर वोह मुझे कुछ देना ही चाहते हैं तो **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र कर के उस के सवाब का तोह़फ़ा दे दें ।

दुन्या परस्त ज़र पे मरे गुल पे अ़न्दलीब *अपना तो इन्तिख़ाब मदीने का है बबूल*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बिन्ते अ़त्तार का जहेज़

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपनी इक्लौती बेटी की शादी भी सादगी को मल्ह़ूज़ रखते हुए **ऐ़न सुन्नत के मुत़ाबिक़** करने की कोशिश फ़रमाई थी। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने एक मदनी मुज़ाकरे में कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : मैं ने पूरी कोशिश की, कि ह़ज़रते सय्यिदतुना **फ़ात़िमा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मेरे **आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो जो इनायत फ़रमाया उस की पैरवी की जाए,

वासित़े जिन के बने दोनों जहां
उन के घर थीं सीधी साधी शादियां

उस जहेज़े पाक पे लाखों सलाम
साह़िबे लौलाक पर लाखों सलाम

(दीवाने सालिक)

मसलन **मश्कीज़ा, गेहूं पीसने वाली हाथ की चक्की, नुक़्रई** (या'नी चांदी के) **कंगन** पेश किये, इसी त़रह़ की दीगर चीज़ें किताबों से देख कर जो जो मुयस्सर आया : **चटाई, मिट्टी के बरतन** और खजूर की छाल भरा **चमड़े का तक्या** वग़ैरा, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **जहेज़** में पेश करने की कोशिश की[1] और रुख़्सत करते वक़्त जिस त़रह़ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ातूने जन्नत फ़ात़िमतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर शफ़्क़तें फ़रमाई थीं[2], اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन सुन्नतों पर भी अ़मल करने की कोशिश की थी।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1. सामाने जहेज़ की तस्वीर आख़िरी सफ़्ह़े पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

2. इमाम जज़री शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **हिस्ने ह़सीन** में नक़्ल फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ात़िमतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का अ़क़्दे निकाह़ ह़ज़रते अमीरुल मुअमिनीन अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में तशरीफ़ लाए और ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : पानी लाओ, वोह पियाले में पानी लाईं आप ने उस में से पानी ले कर उस में कुल्ली की फिर फ़रमाया : आगे आओ, जब वोह आगे आईं तो उन के सीने के दरमियान और सर पर पानी छिड़का और दुआ़ की : ''اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اُعِیْذُھَا بِکَ وَذُرِّیَّتَھَا مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ'' या'नी इलाही ! मैं इस को और इस की औलाद को शैत़ान मरदूद से तेरी पनाह में देता हूं।'' फिर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की जानिब से ''बिन्ते अ़त्तार और दामादे अ़त्तार'' के लिये इस्लाही मदनी फूलों का गुलदस्ता

''दामादे अ़त्तार'' की ख़िदमत में घर चलाने के सिल्सिले में 12 मदनी फूल

﴾1﴿ **हुक़ूक़े ज़ौजैन**, हुर्मते मुसाहरत, नान नफ़्क़े का बयान, ज़िहार का बयान वग़ैरा (बहारे शरीअ़त हिस्सा : 7) का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

﴾2﴿ **वालिदैन** और घर के दीगर अफ़राद की कमज़ोरियां और कोताहियां अपनी ज़ौजा को बता कर ग़ीबत और आबरू रेज़ी की आफ़त में मुब्तला न हों।

﴾3﴿ **इसी** त़रह़ की बातें ज़ौजा भी अगर करे तो उस से कहें صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب। और उसे ऐसी बातें करने से रोक दें वरना ग़ीबत सुनने के गुनाह में गिरिफ़्तार होंगे।

﴾4﴿ ''हम तो बुरा किसी (मुसल्मान) का **देखें सुनें न बोलें**'' येह उसूल अगर अपना लेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मदीना ही मदीना।

﴾5﴿ औ़रत को **राज़ की बात** न बताएं।

बशर राज़े दिली कह कर ज़लीलो ख़्वार होता है

निकल जाती है जब ख़ुश्बू तो गुल बेकार होता है

﴾6﴿ **वालिदैन** का हर ह़ाल में एह़तिराम करें उन के हुक़ूक़ से आप किसी त़रह़ भी सुबुक दोश नहीं हो सकते।

फ़रमाया : पुश्त फेरो जब उन्हों ने पुश्त फेरी तो उन के दोनों कांधों के दरमियान पानी छिड़का और दुआ़ की (या'नी मज़्कूरा बाला दुआ़ जो तरजमे के साथ गुज़री) फिर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : पानी लाओ, ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि मैं समझ गया कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ ही से फ़रमाया है। चुनान्चे मैं उठा और पानी का पियाला भर लाया। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस पियाले से पानी ले कर उस में कुल्ली की फिर फ़रमाया : आगे आओ (चुनान्चे मैं आगे आया) तो आप ने मेरे सर और सामने के जिस्म पर पानी डाला फिर दुआ़ फ़रमाई : اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اُعِيۡذُهٗ بِکَ وَذُرِّيَّتَهٗ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ या'नी इलाही ! मैं इस को और इस की औलाद को शैत़ान मरदूद से तेरी पनाह में देता हूं।'' फिर फ़रमाया : पुश्त फेरो मैं ने पुश्त फेरी तो आप ने मेरे कांधों के दरमियान पानी डाला और दुआ़ फ़रमाई (या'नी मज़्कूरा बाला दुआ़ जो तरजमे के साथ गुज़री) फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से) फ़रमाया कि तुम अल्लाह तआ़ला के नाम और बरकत से अपनी ज़ौजा के पास जाओ।

(المعجم الكبير للطبرانی، الحديث ۱۰۲۱، ج۲۲، ص۴۰۹ ماخوذاً والحصن الحصين، مايتعلق بامور الزواج، ص۷۶)

﴾7﴿ **औ़रत** टेढ़ी पस्ली से निकली है इस को **हि़क्मते अ़मली** से ही चलाने में काम्याबी है। बात बात पर गु़स्सा या डांट डपट करने से बिदक जाने का अन्देशा है।

﴾8﴿ **शोहर** ह़ाकिम होता है और बीवी मह़्कूम। लिहाज़ा ज़ियादा **Free** न हों वरना **रो'ब** ख़त्म हो जाने की सूरत में ''ह़ाकिमिय्यत'' (की धाक) ज़ाएअ़ हो सकती है।

﴾9﴿ **धोने** पकाने का काम ज़ौजा ही के ज़िम्मे लगाएं। (उस के साथ) बिला ज़रूरत किया जाने वाला तआ़वुन हो सकता है उसे **सुस्त** बना दे।

﴾10﴿ **खिड़कियों** और बरआमदों से (बिला उ़ज़्रे सह़ीह़) झांकना शुरफ़ा का काम नहीं। आप भी एह़तियात़ करें और अपनी ज़ौजा पर भी सख़्ती से पाबन्दी डालें ज़रूरतन झांकना पड़े तो येह एह़तियात़ बहर ह़ाल ज़रूर रखें कि (ना मह़रमों और) पड़ोसियों के घरों में नज़र न पड़े।

﴾11﴿ मदनी इन्आ़मात पर आप भी अ़मल करें और बिन्ते अ़त्तार को सख़्ती से करवाएं।

﴾12﴿ **बिन्ते अ़त्त़ार** मह़्ज़ बशर है, ग़लत़ियों का हर इम्कान मौजूद है अगर इस का तज़्किरा आप ने अपने वालिदैन या अफ़्रादे ख़ाना से किया तो ग़ीबत के गुनाह के साथ साथ ''**दा'वते इस्लामी**'' को भी नुक़्सान पहुंच सकता है। आप अह़्सन त़रीक़े से इस्लाह़ की सअ़्य फ़रमाएं। नाकामी की सूरत में इस्लाह़ करवाने की निय्यत से सिर्फ़ मुझ से रुजूअ़ कीजिये। (13 मुह़र्रमुल ह़राम 1418 सि.हि.)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

घर को ख़ुशियों का गहवारा बनाने और आख़िरत संवारने के लिये ''अ़त्त़ार'' (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) की त़रफ़ से ''बिन्ते अ़त्त़ार'' के लिये 12 मदनी फूल

﴾1﴿ **शोहर** की त़रफ़ से मिलने वाला हर हुक्म जो ख़िलाफ़े शरअ़ न हो, बजा लाना ज़रूरी है।

﴾2﴿ **अपने** शोहर और सास का खड़े हो कर इस्तिक़्बाल कीजिये और खड़े हो कर ही रुख़्सत भी कीजिये।

﴾3﴿ **दिन** में कम अज़ कम एक बार (मुम्किन हो तो) सास की **दस्त बोसी** कीजिये।

﴾4﴿ **अपनी** सास और सुसर का वालिदैन की त़रह़ **इक्राम** कीजिये। उन की आवाज़ के सामने अपनी **आवाज़ पस्त** रखिये। उन के और अपने शोहर के सामने "**जी जनाब**" से बात कीजिये।

﴾5﴿ **शोहर** ज़रूरतन सज़ा देने का मजाज़ है।[1] ऐसा हो तो **सब्रो तह़म्मुल** का मुज़ाहरा कीजिये, ग़ुस्सा कर के या ज़बान दराज़ी कर के घर से रूठ कर आ जाने की सूरत में **आप पर "मयके" के दरवाज़े बन्द हैं**।

﴾6﴿ **हां** बिग़ैर रूठे **शोहर की इजाज़त** की सूरत में जब चाहें मयके आ सकती हैं।

﴾7﴿ **अपने** मयके की कोताहियां शोहर को बता कर ग़ीबत के **गुनाहे कबीरा** में न ख़ुद मुब्तला हों न अपने शोहर को "**सुनने**" के गुनाहे कबीरा में मुलव्वस करें।

﴾8﴿ **अपनी** "बे अ़मली" या "ला इ़ल्मी" को ढांपने के लिये इस त़रह़ कह देना कि "मुझे तो वालिदैन ने येह नहीं सिखाया" सख़्त ह़माक़त है।

﴾9﴿ **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 7 "नान नफ़्क़ा का बयान", "ज़ौजैन के ह़ुक़ूक़" वग़ैरा का मुत़ालआ़ कर लीजिये।

---

1 : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان सूरतुन्निसाअ की आयत नम्बर 34 के तह़्त लिखते हैं : रब तआ़ला ने यहां उन की (या'नी बीवियों की) इस्लाह़ की तीन सूरतें बयान फ़रमाईं : (1) नसीह़त करना (2) बाएकाट करना (3) मारना। (मज़ीद लिखते हैं) ना फ़रमानी पर ख़ावन्द मार सकता है मगर इस्लाह़ की मार मारे न कि ईज़ा (या'नी तक्लीफ़ देने) की जैसे शागिर्द को उस्ताद या औलाद को मां बाप इस्लाह़ के लिये मारते हैं। बिला क़ुसूर बीवी को मारना सख़्त मम्नूअ़ है जिस की पकड़ रब (عَزَّوَجَلَّ) के हां ज़रूर होगी। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 5, स. 61)
बहारे शरीअ़त में है : "बीवी नमाज़ न पढ़े तो शोहर उस को मार सकता है इसी त़रह़ तर्के ज़ीनत पर भी मार सकता है और (बिला इजाज़त) घर से बाहर निकल जाने पर भी मार सकता है।"
(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 299)

《10》 **अपने** लिये किसी क़िस्म का "**सुवाल**" अपने शोहर से कर के उन पर बोझ मत बनना। हां अगर वोह मुक़र्रर कर्दा ह़क़ अदा न करें तो मांग सकती हैं।

《11》 **मेहमान** की ख़िदमत सआ़दत समझ कर करना, इस के अख़राजात के मुआ़मले में शोहर पर बे जा बोझ मत डालना। **अपने वालिद** (या'नी सगे मदीना) **से त़लब कर लेना।** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मायूसी नहीं होगी और अगर वोह खुश दिली से रिज़ा मन्द हों तो उन की सआ़दत मन्दी होगी।

《12》 **शोहर** की इजाज़त के बिग़ैर हरगिज़ **घर से न निकलें**। (इस्लामी बहनों को चाहें तो तोह़फ़े में इस तह़रीर की फ़ोटो कॉपी दे सकती हैं)

(3 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1418 सि.हि.)

शादी के मौक़अ़ पर अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی की त़रफ़ से दूल्हा को दिया जाने वाला मक्तूब[1]

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم सगे मदीना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी عُفِیَ عَنْہُ की जानिब से ग़ुलामे मुस्त़फ़ा गदाए ग़ौसुल वरा, साइले बारगाहे इमाम अह़मद रज़ा की ख़िदमते पुर मुसर्रत में मदीनए पाक زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की रंगीन फ़ज़ाओं और मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَکْرِیْمًا की मुश्कबार हवाओं की बरकतों, अ़ज़्मतों, रिफ़अ़तों, सआ़दतों, शराफ़तों और करामतों से मालामाल खुश गवार व खुश्बूदार सलाम :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُم وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ،

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن عَلٰی کُلِّ حَال

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के सदा बहार फूलों और नूरबार कांटों की त़रह़ लहलहाता, मुस्कुराता और **जगमगाता** रखे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को ऐसी मदनी बहारें नसीब फ़रमाए कि ख़ज़ां आप की त़रफ़ आंख उठा कर भी न देखे। **अल्लाह** तआ़ला आप को बार बार ह़ज

---

1. इस मक्तूब में ज़रूरतन तरमीम और रिवायात की तख़रीज की गई है...(इल्मिय्या)

की पुरकैफ़ बहारें और मदीनए पाक زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا के पाकीज़ा नज़ारे दिखाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप से हमेशा हमेशा के लिये राज़ी हो, आप को जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी महबूब का पड़ोस अ़ता करे, आप का सीना मदीना हो और मदीनए पाक زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا के बबूल के तुफ़ैल येह तमाम दुआ़एं मुझ पापी व बदकार के ह़क़ में भी क़बूल हों।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

आप की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के जज़्बे के तह़त मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के 6 मीठे मीठे इर्शादात पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं।

मदीना 1 : तुम जो कुछ भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहते हुए ख़र्च करोगे तुम्हें इस का **सवाब** दिया जाएगा यहां तक कि जो कुछ अपनी बीवी के मुंह में डालोगे उस का भी **सवाब** दिया जाएगा।'' (صحيح البخاری، ج٤، ص١٢، حديث ٥٦٦٨)

मदीना 2 : जो पाक दामनी चाहते हुए अपने आप पर ख़र्च करे तो येह उस के लिये **सदक़ा** है और जो अपनी बीवी, बच्चों और घर वालों पर ख़र्च करे तो येह भी **सदक़ा** है।'' (مجمع الزوائد، ج٣، ص٣٠٢، حديث ٤٦٦٦)

मदीना 3 : आदमी अगर अपनी ज़ौजा को पानी भी पिलाए तो उसे इस का अज्र मिलता है। (مسند امام احمد، مسندالشاميين، ج٦، ص٨٥، حديث ١٧١٥٥)

आज कल बद क़िस्मती से सिर्फ़ बेटे ही की अक्सर लोग तमन्ना करते हैं अगर बेटी पैदा हो जाए तो बुरा मानते हैं, बेटी की फ़ज़ीलत पढ़िये और झूमिये :

मदीना 4 : जिस की लड़की हो और वोह उसे ज़िन्दा दफ़्न न करे और उस की तौहीन न करे और बेटों को उस पर तरजीह़ न दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा। (ابوداوٗد، ج٤، ص٤٣٥، حديث ٥١٤٦)

मदीना 5 : जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लड़कियां दी हों अगर वोह इन के साथ एह़सान करे तो वोह (लड़कियां) उस के लिये जहन्नम की आग से **रोक** हो जाएंगी। (مشکوٰۃ، ج۲، ص ۲۱۰، حدیث ۴۹۴۹)

मदीना 6 : जिस किसी की तीन बेटियां या तीन बहनें हों और वोह उन के साथ हुस्ने सुलूक करे तो जन्नत में दाख़िल होगा। (جامع الترمذی، ج۳، ص۳۶۶، حدیث۱۹۱۹)

बीवी की बद अख़्लाक़ी पर सब्र कीजिये और अज्र कमाइये !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन ख़िरक़ानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی का शोहरा सुन कर एक मो'तक़िद सफ़र कर के **ज़ियारत** के लिये आप के घर ह़ाज़िर हुवा। दस्तक दी और आमद का मक़्सद बताया। आप की ज़ौजा ने बताया वोह जंगल में लकड़ियां लेने गए हैं। और फिर वोह ह़ज़रत की बुराइयां बयान करने लगी। वोह मो'तक़िद परेशान हो कर **जंगल** की त़रफ़ गया, देखा तो दूर से एक शख़्स आ रहा है और उस के पीछे एक **शेर** चला आ रहा है जिस की पीठ पर लकड़ियों का गठ्ठा लदा हुवा है। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दूर ही से फ़रमाया : "मैं ही अबुल ह़सन ख़िरक़ानी हूं, अगर मैं अपनी बद मिज़ाज बीवी का **बोझ** बरदाश्त न करता तो क्या शेर मेरा **बोझ** उठा लेता ?" (تذکرۃ الاولیاء، ص۱۷۴)

ख़बरदार ! अहलो इ़याल को ह़स्बे ज़रूरत अह़कामे शरीअ़त सिखाना ज़रूरी है। इस का एक ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी का चेनल भी है, **T.V.** सिर्फ़ इसी ग़रज़ से लिया जाए और इस में तमाम चेनल्ज़ Lock कर के फ़क़त़ दा'वते इस्लामी का चेनल ही बाक़ी रखा जाए। अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता उन्हें सिर्फ़ और सिर्फ़ उ़लूमे दुन्यवी ही सिखाए, नीज़ गुनाहों से बाज़ रखने के बजाए ख़ुद ही गुनाह करने के आलात मसलन फ़िल्में और डिरामे वग़ैरा देखने के लिये **T.V.** और **V.C.R.** वग़ैरा का घर में एहतिमाम किया और शैत़ान के इस फ़रेब में मुब्तला हो गए कि घर में **T.V.** वग़ैरा का एहतिमाम नहीं करोगे तो तुम्हारे बच्चे

दूसरों के घर जा कर फ़िल्में देखेंगे नीज़ अपने अहलो इयाल को सूद व रिश्वत या ह़राम कमाई खिलाई तो आख़िरत ख़राब होने का अन्देशा है। एक इब्रत नाक रिवायत पढ़िये और ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी से लरज़िये।

बरोज़े क़ियामत एक शख़्स बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर किया जाएगा, उस के बीवी बच्चे फ़रियाद करेंगे, "**या अल्लाह !** इस ने हमें दीन के अह़काम नहीं सिखाए और येह हमें **ह़राम** रोज़ी खिलाता था, लेकिन हम ला इ़ल्म थे। लिहाज़ा उस (शख़्स) को ह़राम रोज़ी के सबब इस क़दर पीटा जाएगा कि उस की खाल तो खाल गोश्त भी उधड़ जाएगा, फिर उस को मीज़ान (या'नी तराज़ू) पर लाया जाएगा, फ़िरिश्ते उस की पहाड़ के बराबर **नेकियां** लाएंगे तो अहलो इयाल में से एक शख़्स उस की **नेकियों** में से ले लेगा। दूसरा बढ़ेगा वोह भी उस की **नेकियों** से अपनी कमी पूरी करेगा। इसी त़रह़ उस की सारी **नेकियां** उस के घर वाले ले लेंगे। अब वोह अपने बाल बच्चों की त़रफ़ रुख़ कर के कहेगा, "अफ़्सोस ! अब मेरी गरदन पर सिर्फ़ उन **गुनाहों** का बोझ रह गया है जो मैं ने तुम लोगों की ख़ात़िर किये थे।" फ़िरिश्ते ए'लान करेंगे। "येह वोह शख़्स है जिस की सारी नेकियां उस के बाल बच्चे ले गए और येह उन की वजह से **जहन्नम** में दाख़िल हुवा।" (قُرَّةُ العیون، الباب الثامن،فی عقوبۃقاتل......الخ، ص ۴۰۱)

यक़ीनन वोह शख़्स बड़ा बद नसीब है जो अपने बाल बच्चों की सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबिय्यत नहीं करता, अपनी बीवी को ह़त्तल मक़्दूर **पर्दा** वग़ैरा के अह़काम नहीं सिखाता। बल्कि अज़ ख़ुद फ़ेशन के सामान मुहय्या करता, मेकअप करवा कर **बे पर्दा** स्कूटर पर बिठाता, शॉपिंग सेन्टरों की **ज़ीनत** बनाता और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में फिरता फिराता है। याद रखिये जो लोग बा वुजूदे कुदरत अपनी औ़रतों और मह़ारिम को बे पर्दगी से मन्अ़ न करें वोह **दय्यूस** हैं, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने

इ़ब्रत निशान है, ''ثَلَاثَةٌ لَا یَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ اَبَدًا اَلدَّیُّوْثُ وَالرَّجُلَةُ مِنَ النِّسَاءِ وَمُدْمِنُ الْخَمْرِ'' (اَلتَّرْغِیْب وَالتَّرْھِیْب، ج٣، ص٧٦، حدیث٨، دارالکتب العلمیه بیروت) या'नी ''तीन शख़्स कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे दय्यूस और मर्दानी वज़्अ़ बनाने वाली औ़रत और आ़दी शराबी।'' ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन **ह़स्कफ़ी** عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''دَیُّوْثٌ ھُوَ مَنْ لَّا یَغَارُ عَلٰی اِمْرَأَتِهٖ اَوْمَحْرَمِهٖ'' (اَلدُّرُّالْمُخْتَار، ج٦، ص١١٣، دارالمعرفة بیروت) या'नी ''दय्यूस'' वोह शख़्स होता है जो अपनी बीवी या किसी मह़रम पर ग़ैरत न खाए।'' मा'लूम हुवा कि बा वुजूदे कु़दरत अपनी ज़ौजा, बहनों और जवान बेटियों वग़ैरा को गलियों, बाज़ारों, शॉपिंग सेन्टरों, मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में बे पर्दा घूमने फिरने, अजनबी पड़ोसियों, ना मह़रम रिश्तेदारों, ग़ैर मह़रम मुलाज़िमों, चोकीदारों, ड्राइवरों से बे तकल्लुफ़ी और बे पर्दगी से मन्अ़ न करने वाले सख़्त अह़मक़, बे ह़या, **दय्यूस,** जन्नत से मह़रूम और जहन्नम के ह़क़दार हैं। अगर मर्द अपनी ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ मन्अ़ करता है और वोह नहीं मानतीं इस सूरत में इस पर न कोई इल्ज़ाम और न वोह दय्यूस।

सास बहू का अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता **इख़्तिलाफ़** हो जाए तो उस में इन्साफ़ का दामन हरगिज़ हाथ से न जाने देना, **मां** को हरगिज़ हरगिज़ मत झाड़ना इसी त़रह़ सिर्फ़ **मां** की फ़रियाद सुन कर बीवी को भी मत मारना, सिर्फ़ और सिर्फ़ **नरमी** से काम लेना कहीं ऐसा न हो कि बाज़ी हाथ से जाती रहे और रोने के दिन आएं। घर के जुम्ला अफ़राद को मेरा सलाम وَالسَّلَامُ مَعَ الْاِکْرَام

ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बिला ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में सरकार के पड़ोस का त़लब गार

शादी के मौक़अ़ पर अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की त़रफ़ से इस्लामी बहनों को दिया जाने वाला मक्तूब

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم सगे मदीना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी عُفِیَ عَنْہُ की जानिब से दरबारे मदीना की भिकारन, कनीज़े ग़ौसे ज़मन, ख़ादिमए शहन्शाहे ज़ुल मनन की ख़िदमत में मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا की मुस्कुराती हुई बहारों और मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَکۡرِیۡمًا के रंगीन रेगज़ारों और वहां के ख़ूब सूरत पहाड़ों की क़ितारों की बरकतों से मालामाल महका महका ख़ुश गवार सलाम ।

اَلسَّلَامُ عَلَیۡکُم وَرَحۡمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ،

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ عَلٰی کُلِّ حَال

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां में शादो आबाद रखे, आप की ख़ुशियों को त़वील करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا के सदा बहार फूलों की त़रह़ हमेशा मुस्कुराती रखे । आप की बीमारियां, परेशानियां घरेलू ना चाक़ियां, तंग दस्तियां, क़र्ज़ दारियां दूर हों । इज़्दिवाजी ज़िन्दगी ख़ुश गवार गुज़रे । औलादे सालिह़ा से गोद हरी रहे, बार बार ह़ज का शरफ़ मिले और मीठा मदीना चूमना नसीब हो ।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आप की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के जज़्बे के तह़त मह़ज़ ह़ुसूले सवाब की ख़ात़िर अ़र्ज़ करता हूं कि अपने शोहर की ख़िदमत में कोताही मत करना, इस ज़िम्न में मीठे मीठे **आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 6 ख़ुश्बूदार इर्शादात पेश करता हूं :

मदीना 1 : क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अगर क़दम से सर तक शोहर के तमाम जिस्म में **ज़ख़्म** हों जिन से पीप और कच लहू बहता हो फिर औ़रत उसे चाटे तब भी ह़क़्क़े शोहर अदा न किया ।

(مسندِ امام احمد، ج٤، ص٣١٨، حدیث١٢٦١٤)

मदीना 2 : ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, कि दो औ़रतें दरवाज़े पर येह सुवाल करने के लिये खड़ी हैं कि अगर वोह अपने शोहर और अपने ज़ेरे कफ़ालत यतीमों पर सदक़ा करें तो क्या उन की त़रफ़ से सदक़ा अदा हो जाएगा ? तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "वोह औ़रतें कौन हैं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : "अन्सार की एक औ़रत और ज़ैनब है।" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "इन दोनों के लिये दुगना अज्र है, एक रिश्तेदारी का और दूसरा सदके़ का।"

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل النفقۃ...الخ، حدیث ۱۰۰۰، ص ۵۰۱ ملخصاً)

मदीना 3 : शोहर ने बीवी को बुलाया उस ने इन्कार कर दिया और उस (शोहर) ने गुस्से में रात गुज़ारी तो फ़िरिश्ते सुब्ह़ तक उस औ़रत पर **ला'नत** भेजते रहते हैं। (صحیح البخاری، ج۲، ص۳۸۸، حدیث ۳۲۳۷) और दूसरी रिवायत में है, (शोहर) जब तक उस से राज़ी न हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस औ़रत से **नाराज़** रहता है।

(کنزالعمال، کتاب النکاح، قسم الاقوال، الحدیث ۴۴۹۹۸، ج۱۶، ص ۱۶۰)

मदीना 4 : और (बीवी) बिग़ैर इजाज़त उस (शोहर) के घर से न जाए अगर ऐसा किया तो जब तक तौबा न करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्ते उस पर ला'नत करते हैं। अ़र्ज़ की गई : अगर्चे शोहर ज़ालिम हो ? फ़रमाया : अगर्चे ज़ालिम हो। (مصنف ابن ابی شیبہ، ج۳، ص۳۹۷، حدیث۳) बात बात पर **रूठ** कर मयके चली जाने वाली औ़रतों के लिये मुन्दरजए बाला ह़दीस में काफ़ी दर्स है।

मदीना 5 : तीन क़िस्म के लोगों की नमाज़ को अल्लाह तआ़ला क़बूल नहीं फ़रमाता एक तो वोह औ़रत जो अपने शोहर की इजाज़त के बिग़ैर **घर से निकले**, दूसरा भागा हुवा गुलाम और तीसरा वोह बादशाह जिस की रिआ़या उसे ना पसन्द करती हो। (کنزالعمال، ج۱۶، ص۲۵، حدیث ۴۳۹۱۹)

शायद किसी इस्लामी बहन को येह वस्वसा आए कि क्या सिर्फ़ औ़रतों पर ही मर्दों के हुक़ूक़ हैं ? मर्दों पर भी औ़रतों के कोई हुक़ूक़ हैं या नहीं ! तो पढ़िये :

मदीना 6 : कोई मोमिन किसी मोमिना बीवी को दुश्मन न जाने अगर उस की

किसी आ़दत से **नाराज़** हो तो दूसरी ख़स्लत से **राज़ी** होगा।

(صحیح مسلم، ص۷۷۵، حدیث ۱٤٦٩)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان लिखते हैं : سُبْحٰنَ الله कैसी नफ़ीस ता'लीम ! मक़्सद येह है कि **बे ऐ़ब** बीवी मिलना ना मुम्किन है, लिहाज़ा अगर बीवी में दो एक **बुराइयां** भी हों तो उसे बरदाश्त करो कि कुछ **ख़ूबियां** भी पाओगे। यहां साह़िबे मिरक़ात ने फ़रमाया : जो बे ऐ़ब साथी की **तलाश** में रहेगा वोह दुन्या में **अकेला** ही रह जाएगा, हम खुद हज़ारहा बुराइयों का सर चश्मा हैं, हर दोस्त अ़ज़ीज़ की बुराइयों से दर गुज़र करो, अच्छाइयों पर नज़र रखो, हां ! **इस्लाह़** की कोशिश करो, बे ऐ़ब तो रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 88)

ज़ैल के पांच मदनी फूल भी अपने दिल के मदनी गुलदस्ते में सजा लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **घर अम्न का गहवारा** बन जाएगा।

मदीना 7 : सास और नन्द से किसी सूरत भी न **बिगाड़िये।** उन की ख़ूब ख़िदमत करती रहिये। अगर वोह त़न्ज़ करें तो **ख़ामोश** रहिये।

मदीना 8 : सास बिलफ़र्ज़ **झिड़कियां** दे तो अपनी मां का तसव्वुर कर लीजिये कि वोह डांट रही हैं तो **सब्र** आसान हो जाएगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मदीना 9 : आप ने कभी सास के ग़ुस्सा हो जाने पर अगर जवाबी ग़ुस्से का मुज़ाहरा किया तो फिर "**निभाव**" मुश्किल तरीन है।

मदीना 10 : सुसराल की "**बद सुलूकी**" की फ़रियाद अपने मयके में करना सामने चल कर **तबाही** का इस्तिक़्बाल करना है। लिहाज़ा सब्र के साथ साथ इस उसूल पर कारबन्द रहिये कि "**एक चुप सो (100) को हराए**" जवाब में सिर्फ़ दुआ़ए ख़ैर कीजिये।

मदीना 11 : उ़मूमन आजकल सुसराल की त़रफ़ से बहू पर "जादू करती है", "अपने शोहर को क़ाबू कर लिया है" वग़ैरा वग़ैरा इल्ज़ाम लगाए जाते हैं, खुदा न ख़्वास्ता आप के साथ ऐसा मुआ़मला हो जाए तो आपे से बाहर हो जाने के

बजाए **ह़िक्मते अ़मली** और इन्तिहाई नरमी से काम लीजिये। अपना कमरा दिन के वक़्त बन्द न रखिये, घर के दूसरे अफ़राद की मौजूदगी में अपने शोहर से "**कानाफूसी**" न कीजिये। शोहर की मौजूदगी में भी चाय वग़ैरा अपनी सास या नन्द के साथ बैठ कर ही पियें। उन के सामने हरगिज़ मुंह न बिगाड़िये, गुस्सा निकालने के लिये बरतन ज़ोर से न पछाड़िये। बच्चों को इस त़रह़ मत डांटिये कि उन को वस्वसा आए कि हमें सुनाती और कोसती है। धोने पकाने के काम में फुरती दिखाइये मत़लब येह कि नजासत को नजासत से (या'नी इल्ज़ाम को हंगामे से) पाक करने के बजाए (ह़िक्मत व ह़ुस्ने अख़्लाक़ के) पानी से ही पाक किया जा सकता है। इस त़रह़ आप اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपने सुसराल की **मन्ज़ूरे नज़र** हो जाएंगी और ज़िन्दगी भी खुश गवार हो जाएगी, सुसराल के ह़क़ में दुआ़ से ग़फ़्लत न कीजिये कि दुआ़ से बड़े बड़े मसाइल ह़ल हो जाते हैं। **सौमो सलात** की पाबन्दी करती रहिये, **शरई पर्दे** का एहतिमाम कीजिये। याद रहे ! देवर व जेठ से भी पर्दा है। अपने घर में "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" का दर्स जारी कीजिये। ख़ामोशी की आ़दत डालिये कि ज़ियादा बोलने से **झगड़े** का अन्देशा बढ़ जाता है। फ़ेशन परस्ती के बजाए **सुन्नतों** का रास्ता इख़्तियार कीजिये कि इसी में भलाई है। मुझ गुनहगार को दुआ़ए ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत से नवाज़ती रहें। अगर आप को मेरा येह मक्तूब पसन्द आए तो इसे प्लास्टिक कोटिंग करवा लीजिये और खुदा न ख़्वास्ता कभी घरेलू झगड़ा हो तो इस को पढ़ लीजिये। وَالسَّلَامُ مَعَ الْاِکْرَام

शादी के मौक़अ़ पर अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی की त़रफ़ से घर के सर परस्त को दिया जाने वाला मक्तूब

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दए आ़जिज़ो लाचार और मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुलामे गुनहगार, उम्मते नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की भलाई का त़लब गार, जिन के यहां शादी हो रही है उन के दुख़ूले जन्नत का ख़्वास्त गार, सगे मदीनए पुर अन्वार मुह़म्मद इल्यास

अ़त्तार क़ादिरी रज़वी عُفِیَ عَنۡہُ की जानिब से शादी की मुसर्रतों और शादमानियों से लबरेज़, घराने के सर परस्त और तमाम अहले ख़ाना व ख़ानदान की ख़िदमात में गुम्बदे ख़ज़रा को चूमता हुवा झूमता हुवा खुश गवार व पुर बहार सलाम और ढेरों मुबारक बाद

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُم وَرَحْمَۃُ اللہِ وَبَرَکَاتُہٗ، اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن عَلٰی کُلِّ حَال

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शादी ख़ाना आबादी फ़रमा, **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ मदीनए मुनव्वरह के सदा बहार फूलों की त़रह़ दूल्हा दुल्हन और दोनों ख़ानदानों को दोनों जहानों में मुस्कुराता रख, इन सब की, तमाम उम्मत की और मुझ पापी व बदकार की मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! आजकल शादी जैसी मीठी मीठी सुन्नत مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ बहुत सारे गुनाहों में घिर चुकी है। मसलन मंगनी में लड़का अपने हाथ से मंगेतर को अंगूठी पहनाता है ह़ालां कि येह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। शादी में दूल्हा अपने हाथ मेहंदी से रंगता है, येह भी ह़राम है, मर्दों और औ़रतों की मख़्लूत़ दा'वतों का सिल्सिला होता है या कहीं कहीं आरपार नज़र आने वाला बराए नाम पर्दा बीच में डाल दिया जाता है, इस पर मज़ीद तुर्रा येह कि औ़रतों में ग़ैर मर्द घुस कर खाना बांटते और ख़ूब विडियो फ़िल्में बनाते हैं।

तौबा ! तौबा ! आजकल शादियों में ख़ानदान की जवान लड़कियां ख़ूब नाचती गाती हैं। इस दौरान मर्द भी बिला तकल्लुफ़ अन्दर आते जाते हैं मर्द और औ़रतें जी भर कर बद निगाही करते हैं न ख़ौफ़े ख़ुदा न शर्मे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم। फ़िल्में डिरामे, नाच गाने, ढोलकी और डंडिया रास के फंक्शन्ज़ देखने वाले येह बात याद रखें कि येह **ह़राम** काम हैं इन का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। चुनान्चे हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुछ ऐसे लोग देखे जिन की आंखें और कान कीलों से ठुके हुए थे। दरयाफ़्त करने पर बताया गया कि येह वोह लोग हैं जो वोह देखते हैं जो इन्हें नहीं देखना चाहिये और वोह सुनते हैं जो इन्हें नहीं सुनना चाहिये। (المعجم الکبیر، الحدیث ۷۶۶۶، ج۸، ص۱۵۶)

शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो गाने वाली के पास बैठे, कान लगा कर ध्यान से उस से सुने तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस के कानों में सीसा उंडेलेगा ।

(كنز العمال، كتاب اللهو واللعب.....الخ، الحديث ٤٠٦٦٢، ج١٥، ص٩٦)

फ़िल्म देखे और जो गाने सुने   कील उस की आंख कानों में ठुके

अफ़्सोस ! फ़िल्मी गानों की धूमों और मूसीक़ी की धुनों और रेकॉर्डिंग के बिग़ैर आजकल शायद ही कहीं शादी होती हो । अगर कोई समझाए तो बा'ज़ अवक़ात जवाब मिलता है, वाह साहिब ! **अल्लाह** ने पहली बार ख़ुशी दिखाई और "गाना बाजा" न करें । बस जी ख़ुशी के वक़्त सब कुछ चलता है ! (مَعَاذَاللّٰه) मुसल्मानो ! ख़ुशी के वक़्त अल्लाह का शुक्र अदा किया जाता है कि ख़ुशियां त़वील हों । ना फ़रमानी नहीं की जाती **अल्लाह** न करे कि इस ना फ़रमानी की नुहूसत से इक्लौती बेटी **दुल्हन** बनने के आठवें दिन रूठ कर मयके आ बैठे और मज़ीद आठ दिन के बा'द **तीन त़लाक़** का परचा आ पहुंचे और सारी ख़ुशियां धूल में मिल जाएं । या धूमधाम से नाच गानों की धमा चौकड़ी में बियाही हुई दुल्हन 9 माह के बा'द पहली ही ज़चगी में मौत के घाट उतर जाए । या ख़ुदा न ख़्वास्ता **दूल्हा** शादी से पहले या चन्द ही रोज़ के बा'द दुन्या से चल बसे क्यूं कि मौत कह कर नहीं आती । एक दर्दनाक वाक़िआ़ पेशे ख़िदमत है ।

ह़िकायत : एक शख़्स जिस का घर क़ब्रिस्तान के क़रीब था उस ने अपने बेटे की शादी के सिल्सिले में रात नाचरंग की मह़फ़िल क़ाइम की लोग नाचकूद और धमा चौकड़ी में मश्ग़ूल थे कि क़ब्रिस्तान का सन्नाटा चीरती हुई दो अ़रबी अश्आ़र पर मुश्तमिल एक गरजदार आवाज़ गूंज उठी या'नी, "ऐ नाचरंग की ना पाएदार लज़्ज़तों में मुन्हमिक होने वालो ! **मौत** तमाम खेलकूद को ख़त्म कर देती है । बहुत से ऐसे लोग हम ने देखे जो मुसर्रतों और लज़्ज़तों में ग़ाफ़िल थे मौत ने उन्हें अपने अहलो इ़याल से जुदा कर दिया ! "रावी कहते

हैं, ख़ुदा की क़सम ! चन्द दिनों के बा'द **दूल्हा** का इन्तिक़ाल हो गया ।
(ابن ابی دنیا، کتاب الاعتبار واعقاب السرور الاحزان، الرقم ۴۱، ج۶، ص ۳۱) आह ! मौत की आंधी आई और ठठ्ठा मस्ख़रियों, धमा चौकड़ियों, संगीत की धुनों, चुटकुलों और क़हक़हों शादमानियों और मुसर्रतों, मचलते अरमानों और ख़ुशी की तमाम राहृत सामानियों को उड़ा कर ले गई । **दूल्हा मियां** मौत के घाट उतर गए और ख़ुशियों भरा घर देखते ही देखते मातम कदा बन गया ।

तुम ख़ुशी के फूल लोगे कब तलक तुम यहां ज़िन्दा रहोगे कब तलक

इस हि़कायत को सुन कर शादियों में बेहूदा फंक्शन बरपा करने वालों और इन में शरीक हो कर गाने बाजे की धुनों पर हंस हंस कर ख़ुशी के ना'रे बुलन्द करने वालों की आंखें खुल जानी चाहिएं । **याद रखिये** ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मन्क़ूल है, **''जो हंस हंस कर गुनाह करेगा वोह रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा ।''**
(مکاشفة القلوب، الباب السادس والثمانون فی الضحك والبكاء والباس، ص ۲۷۵)

ग़ौर कीजिये ! कौन सा ''जोड़ा'' आज सुखी है ? कमो बेश हर जगह ख़ाना जंगी है, कहीं सास बहू में मोरचा बन्दी है तो कहीं नन्द और भावज में ठीकठाक ठनी है । बात बात पर ''रूठ मन'' का सिल्सिला है । एक दूसरे पर जादू टोने करवाने के इल्ज़ामात हैं, येह सब कहीं शादियों में ग़ैर शरई ह़रकात का नतीजा तो नहीं ? क्यूंकि आजकल जिस के यहां **शादी** का सिल्सिला होता है वहां इतने गुनाह किये जातें हैं कि उन का शुमार नहीं हो सकता ।

हाथ जोड़ कर मेरी मदनी इल्तिजा है कि घर के जुम्ला अफ़राद दो रक्अ़त **नमाज़े तौबा** अदा करें और गिड़गिड़ा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करें और आयन्दा गुनाहों से बचने का अ़ह्द करें ।

''शादी मुबारक'' के 9 हुरूफ़ की निस्बत से नव मदनी फूल

﴾1﴿ बहू को चाहिये कि अपनी मां बहनों ही की त़रह़ अपनी सास और नन्द से भी महृब्बत करे ﴾2﴿ बहू की मौजूदगी में मां और बेटी का आपस में कानाफूसी

करना बहू के लिये वस्वसों का बाइस और उस के दिल में एह़सासे मह़रूमी पैदा करने वाला है और इस त़रह़ इस के दिल में नफ़रतों की बुन्याद पड़ती है ﴾3﴿ बहू को जब तक बेटी से बढ़ कर सास का प्यार नहीं मिलेगा उस वक़्त तक उस का अपनी सास, नन्दों से मानूस होना बहुत मुश्किल है ﴾4﴿ सास कभी डांट दे तो बहू को चाहिये कि अपनी मां की डांट समझ कर बरदाश्त कर ले ﴾5﴿ अगर कभी बहू **बद तमीज़ी** कर बैठे तो सास को चाहिये कि बेटी समझ कर मुआ़फ़ कर दे ﴾6﴿ भूल कर भी येह अल्फ़ाज़ किसी के मुंह से न निकलें कि "बहू ता'वीज़ करवाती है" वरना फ़साद बरपा और सुकून बरबाद हो सकता है ﴾7﴿ अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता कभी घर से ता'वीज़ मिल भी जाए तब भी बिग़ैर शरई सुबूत के येह तै़ कर लेना कि बहू ने डाला, जाइज़ नहीं ﴾8﴿ यक़ीन जानिये शैत़ान भी ता'वीज़ ऐसी जगह डाल सकता है कि घर के किसी फ़र्द के हाथ लग जाए और घर में फ़साद खड़ा हो ﴾9﴿ भाभी का देवर व जेठ से पर्दा न करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। सास और सुसर वग़ैरा बा वुजूदे क़ुदरत नहीं रोकेंगे तो ख़ुद भी गुनहगार होंगे।

"अल्लाह" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से चार मदनी इल्तिजाएं

﴾1﴿ तमाम अहले ख़ाना को येह मक्तूब पढ़ कर सुना दिया जाए। दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत की मदनी इल्तिजा है ﴾2﴿ घर के तमाम अफ़राद नमाज़ रोज़े की पाबन्दी करते रहें और मदनी इन्आ़मात का हर माह रिसाला पुर कर के जम्अ़ करवाएं। मकतबतुल मदीना के जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान का कम अज़ कम एक केसिट हो सके तो रोज़ाना ज़रूर सुनिये ﴾3﴿ मुनासिब ख़याल फ़रमाएं तो येह मक्तूब संभाल कर रख लीजिये और ख़ुदा न ख़्वास्ता घर में कभी ना इत्तिफ़ाक़ी हो जाए तो कम अज़ कम आख़िरी 9 मदनी फूल पढ़ लीजिये ﴾4﴿ घर का हर मर्द जिस की उ़म्र 20 बरस से ज़ाइद हो वोह हर माह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के तीन रोज़ा मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र किया करे। وَالسَّلَامُ مَعَ الْاِکْرَام

मदनी सेहरा (इस्लामी भाइयों के लिये)

(अज़ शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना महम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

(**ऐ** फूलों से सजी हुई कार में सुवार हो कर जगमगाते हुज्रए उरूसी की तरफ़ खुशी खुशी जाने वाले आरिज़ी दूल्हा ! याद रख ! अन्क़रीब तुझे फूलों से लदे हुए जनाज़े में सुवार हो कर कीड़े मकोड़ों से उभरती हुई घुप अंधेरी क़ब्र में जा पड़ना है। अत्तारे गुनहगार के नज़्दीक हक़ीक़ी शादी (खुशी) क़ब्र में ईमान सलामत ले जाना है। आह ! काश बक़ीअ)

खुशनुमा खुशरंग फूलों का है सर सेहरा सजा
फ़ज़्ले मौला से गुलाम अहमद रज़ा दूल्हा बना

अज़ पए ग़ौसुल वरा बहरे इमाम अहमद रज़ा
इन की "शादी ख़ाना आबादी" हो रब्बे मुस्तफ़ा

इन की बीवी को इलाही बख़्श तौफ़ीक़े हया
इन की ज़ौजा या खुदा करती रहे पर्दा सदा

घर के झगड़ों से बचाना तू इन्हें रब्बुल उला
तू सदा रखना सलामत इन का जोड़ा या खुदा

इन पे रन्जो ग़म की ना छाए कभी काली घटा
इन को खुशियां दो जहां में तू अता कर किब्रिया

या इलाही ! इन का घर गह्वारए सुन्नत बना
आफ़ते फ़ेशन से हर दम इन को तू मौला बचा

नेक और परहेज़ गार औलाद कर दे तू अता
इन को उम्मत में इज़ाफ़े का सबब मौला बना

फूल जैसा कि महकते हैं मदीने के सदा
सादगी से इस तरह घर इन का महके या खुदा

खूब ख़िदमत सुन्नतों की येह सदा करता रहे
येह गुलाम अहमद रज़ा जब तक यहां ज़िन्दा रहे

बार बार इन को दिखा मीठे मुहम्मद का दियार
या इलाही दे सआदत इन को हज की बार बार

सब्ज गुम्बद का तुझे देता हूं मौला वासिता
हो बक़ीए पाक में दोनों को मदफ़न भी अता

या इलाही ! है येही अत्तार के दिल की दुआ
येह मियां बीवी रहें जन्नत में यक्जा ऐ खुदा

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी सेहरा (इस्लामी बहनों के लिये)

(**अज़ :** शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

रुख़्सती में तेरी पिन्हां रुख़्सती है क़ब्र की[1]
तुझ को हो शादी मुबारक अब है तेरी रुख़्सती

रब हो राज़ी खुश हों तुझ से दो जहां के ताजदार
घर तेरा हो मुश्कबार और ज़िन्दगी भी पुर बहार

फ़ातिमा ज़हरा का सदक़ा दो जहां में शाद रख
मेरी बेटी का खुदाया घर सदा आबाद रख

---

1 : याद रख जिस तरह आज तुझे दुल्हन बना कर फूलों से लाद कर हुज्रए उरूसी में ले जाया जा रहा है इसी तरह जल्द ही तेरे जनाज़े को फूलों से लाद कर अंधेरी क़ब्र की तरफ़ ले जाया जाएगा।

तू खुशी के फूल लेगी कब तलक — *तू यहां ज़िन्दा रहेगी कब तलक !*

येह मियां बीवी इलाही मक्रे शैतां से बचें
येह नमाज़ें भी पढ़ें और सुन्नतों पर भी चलें
येह मियां बीवी चलें हज को इलाही बार बार
बार बार इन को दिखा मीठा मदीना किर्दगार
मयका व सुसराल तेरे दोनों ही ख़ुशहाल हों
दो जहां की ने'मतों से ख़ूब मालामाल हों
अपने शोहर की इताअत से न ग़फ़्लत करना तू
हश्र में पछताएगी ऐ प्यारी बेटी वरना तू
मेरी बेटी ! या इलाही ! ना बने गुस्से की तेज़
येह करे सुसराल में हर दम लड़ाई से गुरेज़
याद रख ! तू आज से बस तेरा घर सुसराल है
नफ़रते सुसराल सुन ले आफ़तों का जाल है
मां समझ कर सास को, ख़िदमत जो करती है बहू
राज सारे घर पे सुन ले तू वोह करती है बहू
सास और नन्दों की ख़िदमत कर के हो जा काम्याब
इन की ग़ीबत कर के मत कर बैठना ख़ाना ख़राब
सास और नन्दें अगर सख़्ती करें तो सब्र कर
सब्र कर बस सब्र कर चलता रहेगा तेरा घर
सास और नन्दों का शिक्वा अपने मयके में न कर
इस तरह बरबाद हो सकता है बेटी तेरा घर[1]
मयके के मत कर फ़ज़ाइल तू बयां सुसराल में [2]
अब तू इस घर को समझ अपना ही घर हर हाल में
सास चीख़ी तू भी बिफरी और लड़ाई ठन गई
है कहां भूल एक की, दो हाथ से ताली बजी
याद रख तू ने अगर खोली ज़बां सुसराल में
फंस के रह जाएगी बेटी ! क़ज़ियों के जन्जाल में
मेरी प्यारी बेटी सुन फ़ैज़ाने सुन्नत पढ़ के तू
इल्तिजा है रोज़ देना दर्स अपने घर पे तू
गर नसीहत पर अमल अत्तार की होगा तेरा
اِنْ شَآءَاللّٰه अपने घर में तू सुखी होगी सदा

घर अम्न का गहवारा कैसे बने ?

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **6 ज़ुल क़ा'दातिल** हराम 1428 सि.हि. 17 दिसम्बर 2007 सि.ई. बरोज़ पीर शरीफ़ एक इस्लामी भाई और उन के बच्चों की अम्मी को **घरेलू नाचाक़ी के इलाज** के लिये नसीहत के मदनी फूल इनायत फ़रमाए (जिन में ज़रूरतन कहीं कहीं तरमीम की गई है) इन मदनी फूलों पर अमल कर के اِنْ شَآءَاللّٰه घर को ह़क़ीक़ी मा'नों में **अम्न का गहवारा** बनाया जा सकता है।

1.अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता सुसराल में कोई चपक़लिश हो जाए तो मयके में इस की भड़ास निकालने में येह ख़तरा है कि मां, बहनें हमदर्दी करें और उन की शह मिलने पर जज़्बात मज़ीद मुश्तइल हों और यूं लड़ाई ठन्डी होने के बदले मज़ीद बढ़ जाए और नतीजतन घर बरबाद हो जाए, आजकल इस तरह से घर तबाह हो रहे हैं इसी लिये सगे मदीना ने येह नसीहत करने की जसारत की है। (कोई सुने या न सुने रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स जारी रखने की मदनी इल्तिजा है।)

2. : अपने मां, बाप या भाई बहनों की सख़ावतों के उ़मूमन चर्चे बहू अपने सुसराल में करती है जिस से सुसराल वालों को शैतान वस्वसा डालता है कि येह तुम लोगों को सुनाती और जताती है कि तुम लोग तो कन्जूस और बे मुरुव्वत हो। और यूं नफ़रतों की बुन्यादें मज़बूत होती हैं। बहू का मुंह फुलाए रहना भी फ़साद की सूरत बनता है। इस तरह सुसराल के सामने अपने बच्चों को कोसने से भी गुरेज़ करें, कि बा'ज़ अवक़ात सुसराल वाले समझते हैं येह हमें सुना रही है, फिर जंग छिड़ जाती है।

“मिज़ाज शनासी की आ़दत डालो” के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से शादीशुदा इस्लामी भाइयों के लिये 19 मदनी फूल

मदीना 1 : इस में कोई शक नहीं कि शोहर अपनी ज़ौजा पर **हा़किम** है ताहम **इन्साफ़** से काम लेना ज़रूरी है कि हा़किम से मुराद सियाह सफ़ेद का मालिक होना नहीं है।

मदीना 2 : औ़रत टेढ़ी पस्ली की **पैदावार** है, उस की नफ़्सिय्यात को परख कर उस के साथ **बरताव** कीजिये। अगर अपनी सोच के **मे'यार** पर उस को तोलेंगे तो घर चलना बहुत **दुश्वार** है।

मदीना 3 : औ़रत उ़मूमन **नाक़िसुल अ़क़्ल** होती है, 100 फ़ीसद आप के मे'यार पर पूरी उतरे येह **तवक़्क़ोअ़** उस से बेकार है, लिहाज़ा उस की कोताहियों को नज़र अन्दाज़ कर के उस पर मज़ीद **एह़सानात** कीजिये।

मदीना 4 : लाख ग़लति़यां करे, मुंह **चढ़ाए, बुड़बुड़ाए**, अगर आप घर **आबाद** देखना चाहते हैं तो उस के साथ उस वक़्त तक **नरमी** से पेश आने का ज़ेह्न बनाते रहिये जब तक शरीअ़त सख़्ती की **इजाज़त** न दे।

मदीना 5 : अगर औ़रत टेढ़ी चलती रही और आप **सब्र** करते रहे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अज्रो सवाब** का आख़िरत में अम्बार देखेंगे। नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ता़ने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : “**कामिल ईमान** वालों में से वोह भी है जो **उ़म्दा अख़्लाक़** वाला और अपनी ज़ौजा के साथ सब से ज़ियादा नर्म त़बीअ़त वाला है।

(جامع الترمذی، ج۲، ص۳۸۷، حدیث ۱۱٦٥)

मदीना 6 : अगर बीवी आप के **मन पसन्द** खाने नहीं पका पाती तो **सब्र** कीजिये। मह़ज़ नफ़्स की मा'मूली **लज़्ज़त** की ख़ाति़र बिला इजाज़ते शरई उस

को डांट डपट करना, मारधाड़ पर उतर आना **बरबादिये आख़िरत** का बाइस है बन सकता।

मदीना 7 : जिस त़रह़ आ़म मुसल्मानों की दिल आज़ारी **ह़राम** है उसी त़रह़ बिला मस्लह़ते शरई बीवी की दिल आज़ारी में भी जहन्नम की **ह़क़दारी** है।

मदीना 8 : अगर कभी गुस्सा आ जाए और ज़ौजा पर **नाह़क़** ज़बान चल जाए या बिला मस्लह़ते शरई हाथ उठ जाए तो **तौबा** भी वाजिब और **तलाफ़ी** भी लाज़िम। बिग़ैर शरमाए और बिग़ैर अपनी कस्रे शान समझे उस से निहायत लजाजत व नदामत के साथ इस त़रह़ **मा'ज़िरत** कीजिये कि उस का दिल साफ़ हो जाए और वोह वाक़िअ़तन **मुआ़फ़** कर दे। हर जगह **रस्मी SORRY** बोल देना काम नहीं देता न इस त़रह़ ह़क़्क़ुल अ़ब्द से यक़ीनी **ख़लासी** होती है। **जैसा जुर्म वैसी मुआ़फ़ी तलाफ़ी।**

मदीना 9 : कभी आप की पुकार पर **जवाब** न मिले तो बे तह़ाशा बरस पड़ना **सिफ़्ला पन** है, ह़ुस्ने ज़न से काम लीजिये कि बेचारी ने **सुना** न होगा या कोई और **मजबूरी** मानेअ़ हुई होगी।

मदीना 10 : कभी कपड़े की इस्त्री बराबर न हुई, खाने में नमक मिर्च **कमोबेश** हुवा, **ताज़ा** खाना पका कर न दिया, दूसरे दिन का गर्म कर के **ठन्डा** ही रख दिया, बरतन बराबर न **धुल** पाए तो जारिह़ाना अन्दाज़ से **हुक्म** चलाने और **डांट** पिलाने के बजाए **नरमी** से **तफ़्हीम** (या'नी समझाना), **इज़्दियादे हुब** (या'नी मह़ब्बत में इज़ाफ़े) का बाइस होगी। नफ़्सो शैत़ान की **चालों** को समझने की कोशिश कीजिये, नफ़्रतें मत बढ़ाइये।

मदीना 11 : ज़बान से बताने में **गुस्सा** आ जाता हो और बात **बिगड़** जाती हो तो अगर फ़रीक़ैन ऐसे मौक़अ़ पर एक दूसरे को **तह़रीरी** त़ौर पर समझाने का मा'मूल बनाएं तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **झगड़े** की नौबत नहीं आएगी।

मदीना 12 : होटल या बाज़ार की गिज़ा की मानिन्द **लज़ीज़ अग़्ज़िया** (या'नी गिज़ाएं) बनाने का ज़ौजा से बिल जब्र **मुत़ालबा** करना नफ़्स की **पैरवी** और उस के न बनाने पर त़न्ज़ो मिज़ाह़, त़ा'नो तश्नीअ़ और ज़बर दस्ती की **दिल आज़ारी** करना शैत़ान की ख़ुशी का **सामान** है।

मदीना 13 : अपनी वालिदा वग़ैरा की **शिकायत** पर बिग़ैर शरई सुबूत के ज़ौजा को **झाड़ना** या मारना वग़ैरा **ज़ुल्म** है और **ज़ालिम जहन्नम का ह़क़दार ।** ख़ातमुल मुरसलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है **: ''ज़ुल्म जहन्नम में ले जाने वाला है ।''**

(جامع الترمذی، ج٣، ص٤٠٦، حدیث ٢٠١٦ ملخصاً)

मदीना 14 : अपना काम अपने हाथ से करना बाइ़से सआ़दत और **अ़ज़ीम सुन्नत** है। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने कपड़े ख़ुद सी लेते और अपने ना'लैने मुबारकैन गांठते और वोह सारे काम करते जो मर्द अपने घरों में करते हैं।''

(کنزالعمال، ج٧، ص ٦٠، حدیث١٨٥١٤)

मदीना 15 : छोटी छोटी बातों पर बीवी को **हुक्म** देना मसलन येह उठा दो, वोह रख दो, फ़ुलां चीज़ ढूंड कर ला दो वग़ैरा से **बचना** और अपना काम अपने हाथ से कर लिया करना **घर को अम्न का गहवारा** बनाने में मदद देता है।

मदीना 16 : अपने छोटे छोटे कामों के लिये बीवी को नींद से **जगा** देना, कामकाज और झाड़ू पोचे के दौरान, आटा गूंधते हुए, नीज़ दर्दे सर, नज़्ला या दीगर बीमारियों के होते हुए उन को **काम** के ऑर्डर दिये जाना घर के माह़ोल को ख़राब कर सकता है। जिस त़रह़ आप को **नींद** प्यारी है, सुस्ती होती है, मूड

ऑफ़ होता है इसी त़रह के **अ़वारिज़** औ़रत को भी दरपेश होते हैं बल्कि मर्द के मुक़ाबले में औ़रत को नींद ज़ियादा आती है नीज़ उस को भी ग़ुस्सा आ सकता है लिहाज़ा **मिज़ाज शनासी** की आ़दत डालिये।

मदीना 17 : फ़रीक़ैन में से अगर एक को **ग़ुस्सा** आ जाए तो दूसरे का **ख़ामोश** रहना बहुत ज़रूरी है कि ग़ुस्से का ग़ुस्से से इज़ाला बसा अवक़ात **ख़त़रनाक** साबित होता है।

मदीना 18 : बावर्ची ख़ाने में मस्रूफ़िय्यत के दौरान बीवी को इस त़रह **तन्क़ीद** का निशाना बनाना कि **आलू** तराश्ना नहीं आता, **टमाटर** काटने का ढंग नहीं, **अदरक** क्या इस त़रह काटते हैं ? वग़ैरा वग़ैरा बहुत ही **तक्लीफ़ देह** और बाइसे तन्फ़ीर होता है। अ़क्ल मन्द वोही है जो बीवी की जाइज़ त़ौर पर **ह़ौसला अफ़्ज़ाई** करता रहे और अपना काम निकालता रहे।

मदीना 19 : मियां बीवी का बच्चों के सामने **लड़ना** झगड़ना उन के अख़्लाक़ के लिये भी **तबाह कुन** है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

''शोहर ह़ाकिम होता है'' के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से शादीशुदा इस्लामी बहनों के लिये 14 मदनी फूल

मदीना 1 : मियां ह़ाकिम होता और **बीवी** मह़्कूम होती है इस के उलट होने का **ख़याल** भी दिल में न लाइये।

मदीना 2 : जब मियां **ह़ाकिम** है तो उस की इत़ाअ़त को **लाज़िम** समझिये। **सय्यिदुल मुरसलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''औ़रत जब पांच **नमाज़ें** पढ़े, रमज़ान के **रोज़े**

रखे, अपनी इ़ज़्ज़त की **हि़फ़ाज़त** करे और अपने ख़ावन्द की **इत़ाअ़त** करे तो जिस दरवाज़े से चाहे **जन्नत** में दाख़िल हो।" (المعجم الاوسط، ج۳، ص۲۸۳، حدیث۴۵۹۸)

मदीना 3 : उन का शरीअ़त के मुत़ाबिक़ मिलने वाला हर **हुक्म** ख़्वाह नफ़्स पर कितना ही गिरां हो **ख़ुशदिली** के साथ सर आंखों पर लीजिये।

मदीना 4 : उन की पसन्द के **खाने** उन की मरज़ी के मुत़ाबिक़ उ़म्दा त़रीक़े पर **पका** कर, बश्शाशत के साथ पेश कर के उन के दिल में **ख़ुशी** दाख़िल कर के बे अन्दाज़ा सवाब की ह़क़दार बनिये। **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक फ़राइज़ की अदाएगी के बा'द सब से अफ़्ज़ल अ़मल मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना है।" (المعجم الکبیر، ج۱۱، ص۵۹، حدیث۱۱۰۷۹)

मदीना 5 : उन की हर वोह तन्क़ीद जो शरअ़न **दुरुस्त** हो अगर इस पर **बुरा** लगे तो उसे शैत़ान का वार समझ कर **लाह़ौल** शरीफ़ पढ़ कर शैत़ान को **ना मुराद** लौटाइये।

मदीना 6 : अगर किसी ख़त़ा बल्कि ग़लत़ फ़हमी की बिना पर भी मियां **डांट डपट** करे या बिलफ़र्ज़ **मारे** तो हंसी ख़ुशी **सह** लीजिये कि इस में आप की आख़िरत के साथ साथ दुन्या में भी **भलाई** है और اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **घर अम्न का गहवारा** रहेगा।

मदीना 7 : अगर सामने **ज़बान** चलाई, **मुंह** फुलाया, **बरतन** पछाड़े, मियां का ग़ुस्सा बच्चों पर **उतारा** और इसी त़रह़ की दीगर **ना मुनासिब ह़रकतें** कीं तो इस से ह़ालात **संवरने** के बजाए मज़ीद **बिगड़ेंगे**, येह अच्छी त़रह़ गिरेह में

बांध लीजिये कि इस त़रह़ करने से अगर ब ज़ाहिर **सुल्ह़** हो भी गई तब भी दिलों में से **नफ़रतें** ख़त्म होने का इम्कान न होने के बराबर है।

मदीना 8 : मियां की ख़ामियों के बजाए ख़ूबियों ही पर **नज़र** रखिये और उन के ह़क़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से **डरती** रहिये।

ऐबों को ऐब जू की नज़र ढूंडती है पर जो ख़ुश नज़र है ख़ूबियां आएं उसे नज़र

मदीना 9 : मियां या सुसराल की **शिकायत** मयके में करना दुन्या व आख़िरत के लिये सख़्त **नुक़्सान** देह साबित हो सकता है कि फ़ी ज़माना मुशाहदा येही है कि इस त़रह़ ग़ीबतों, तोह्मतों, चुग़्लियों, ऐब दरियों और दिल आज़ारियों वग़ैरा त़रह़ त़रह़ के **गुनाहों** का बहुत बड़ा **दरवाज़ा** खुल जाता है फिर उस की नुहूसत से बारहा दुन्या में येह **आफ़त** आती है कि घर **टूट** जाता है।

मदीना 10 : हां अगर वाक़ेई शोहर **ज़ुल्म** करता है या सुसराल वाले **सताते** हैं तो सिर्फ़ ऐसे शख़्स को अच्छी **निय्यत** के साथ **फ़रियाद** की जाए जो ज़ुल्म से बचा सकता, सुल्ह़ करवा सकता हो या **इन्साफ़** दिलवा सकता हो, बाक़ी सिर्फ़ भड़ास निकालना, दिल हलका करने के लिये "घर की बातें" मयके या सहेलियों के पास करना ग़ीबतों और तोह्मतों वग़ैरा के **गुनाहों** में डाल कर सुनने सुनाने वालों को **जहन्नम** का ह़क़दार बना सकता है।

मदीना 11 : बिलफ़र्ज़ शोहर या सास वग़ैरा की किसी ह़रकत से कभी दिल को **ठेस** पहुंचे तो ख़ुद को **क़ाबू** में रखिये, येह आप के **इम्तिह़ान** का मौक़अ़ है कि या तो ज़बान व दिल को क़ाबू में रख कर **सब्र** कर के जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों को पाने की सअ़्य कीजिये या ज़बान की **आफ़तों** में पड़ कर शरीअ़त का दाएरा **तोड़** कर अपने आप को **जहन्नम** की ह़क़दार ठहराइये।

मदीना 12 : अगर्चे आप कितनी ही **मस्रूफ़** हों, ख़्वाह **नींद** के मज़े लूट रही हों, जूं ही शोहर आवाज़ दे, **सवाबे** अ़ज़ीम पाने की निय्यत से फ़ौरन **लब्बैक** (या'नी मैं ह़ाज़िर हूं) कहती हुई उठ बैठिये और उन की **ख़िदमत** में मश्ग़ूल हो कर **जन्नतुल फ़िरदौस के ख़ज़ाने** समेटना शुरूअ़ कर दीजिये।

मदीना 13 : शोहर की दिलजूई की ख़ातिर उन के वालिदैन वग़ैरा की **ख़ुशदिली** के साथ **ख़िदमत** बजा लाइये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **दोनों जहां में बेड़ा पार होगा।**

कर भला हो भला

मदीना 14 : शोहर की हरगिज़ **ना शुक्री** मत किया कीजिये कि उस के आप पर बे शुमार **एह़सानात** हैं। **सरकारे नामदार**, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्द गार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक बार ईद के रोज़ ईदगाह तशरीफ़ ले जाते हुए ख़वातीन की त़रफ़ गुज़रे तो फ़रमाया : "ऐ औ़रतो ! **सदक़ा** किया करो क्यूं कि मैं ने अक्सर तुम को **जहन्नमी** देखा है।" ख़वातीन ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस की वजह ? फ़रमाया : "इस के लिये तुम **ला'नत** बहुत करती हो और अपने शोहर की **ना शुक्री** करती हो। (صحیح البخاری، ج۱، ص۱۲۳، حدیث۳۰٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने की बरकत से **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की मेहरबानी से बे वक़्अ़त पथ्थर भी **अनमोल हीरा** बन जाता, ख़ूब **जगमगाता** और ऐसी शान से पैके अजल को **लब्बैक**

कहता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और ऐसी ही मौत की आरज़ू करने लगता है। आप भी **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत और **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र कीजिये और शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुआ़ : या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पैरवी में ख़ुशी व ग़म में अह़कामे शरीअ़त पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें मदनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ग़ौर से पढ़ कर येह फ़ार्म पुर कर के तफ़्सील लिख दीजिये

जो इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** या **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **कुतुब व रसाइल** सुन या पढ़ कर, बयान की **केसिट** सुन कर या हफ़्तावार, सूबाई **इज्तिमाआ़त** में शिर्कत या **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र या **दा'वते इस्लामी** के किसी भी मदनी काम में शुमूलिय्यत की बरकत से मदनी माह़ोल

से वाबस्ता हुए, ज़िन्दगी में **मदनी इन्क़िलाब** बरपा हुवा, नमाज़ी बन गए, दाढ़ी, इमामा वग़ैरा सज गया, आप को या किसी अ़ज़ीज़ को ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर **सिह़्ह़त** मिली, परेशानी दूर हुई, या मरते वक़्त **कलिमए त़य्यिबा** नसीब हुवा या अच्छी ह़ालत में **रूह़ क़ब्ज़** हुई, मर्हूम को अच्छी ह़ालत में **ख़्वाब** में देखा, **बिशारत** वग़ैरा हुई या **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के ज़रीए आफ़ात व बलिय्यात से नजात मिली हो तो हाथों हाथ इस फ़ॉर्म को पुर कर दीजिये और एक सफ़ह़े पर वाक़िए की तफ़्सील लिख कर इस पते पर भिजवा कर एह़सान फ़रमाइये **''मदनी मर्कज़'' फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर अह़मदआबाद, गुजरात (इन्डिया)**

नाम मअ़ वल्दिय्यत : .... उ़म्र .... किन से मुरीद या त़ालिब हैं .... ख़त़ मिलने का पता .... फ़ोन नम्बर (बमअ़ कोड) : .... ईमेइल एड्रेस .... इन्क़िलाबी केसिट या रिसाले का नाम : .... सुनने, पढ़ने या वाक़िआ रूनुमा होने की तारीख़ महीना/साल : .... कितने दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र किया : .... मौजूदा तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी .... **मुन्दरिजए** बाला ज़राएअ़ से जो बरकतें ह़ासिल हुईं, फ़ुलां फ़ुलां बुराई छूटी वोह तफ़्सीलन और पहले के अ़मल की कैफ़िय्यत (अगर इब्रत के लिये लिखना चाहें) मसलन फ़ेशन परस्ती, डकैती वग़ैरा और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَكَاتُهُمُ الۡعَالِيَه की ज़ाते मुबारका

से ज़ाहिर होने वाली **बरकातो करामात** के ''**ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआत**'' मक़ाम व तारीख़ के साथ एक सफ़्हे पर **तफ़्सीलन तह़रीर फ़रमा दीजिये ।**

मदनी मश्वरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दौरे ह़ाज़िर की वोह यगानए रूज़गार हस्ती हैं कि जिन से शरफे़ बैअ़त की बरकत से लाखों मुसल्मान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम और उस के **प्यारे ह़बीबे लबीब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं । खै़र ख़्वाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त हमारा **मदनी मश्वरा** है कि अगर आप अभी तक किसी जामेए शराइत़ पीर साहि़ब से बैअ़त नहीं हुए तो शैखे़ त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ुयूज़ो बरकात से **मुस्तफ़ीद** होने के लिये इन से **बैअ़त** हो जाइये । اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में काम्याबी व सुर्ख़रूई नसीब होगी ।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं, तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार मअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर ''**मदनी मर्कज़**'' **फै़ज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद,गुजरात (इन्डिया)** के पते पर रवाना फ़रमा दें, तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए **क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा । (पता इंग्रेज़ी के केपिटल हुरूफ़ में लिखें)

E.mail : mmaa.dawateislamihind@gmail.com

﴾1﴿ नाम व पता बॉल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मश्हूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं। ﴾2﴿ एड्रेस में महरम या सर परस्त का नाम ज़रूर लिखें ﴾3﴿ अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

नम्बर शुमार	नाम	मर्द / औरत	बिन / बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल एड्रेस

मदनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमे'रात इ़शा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ''** अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ